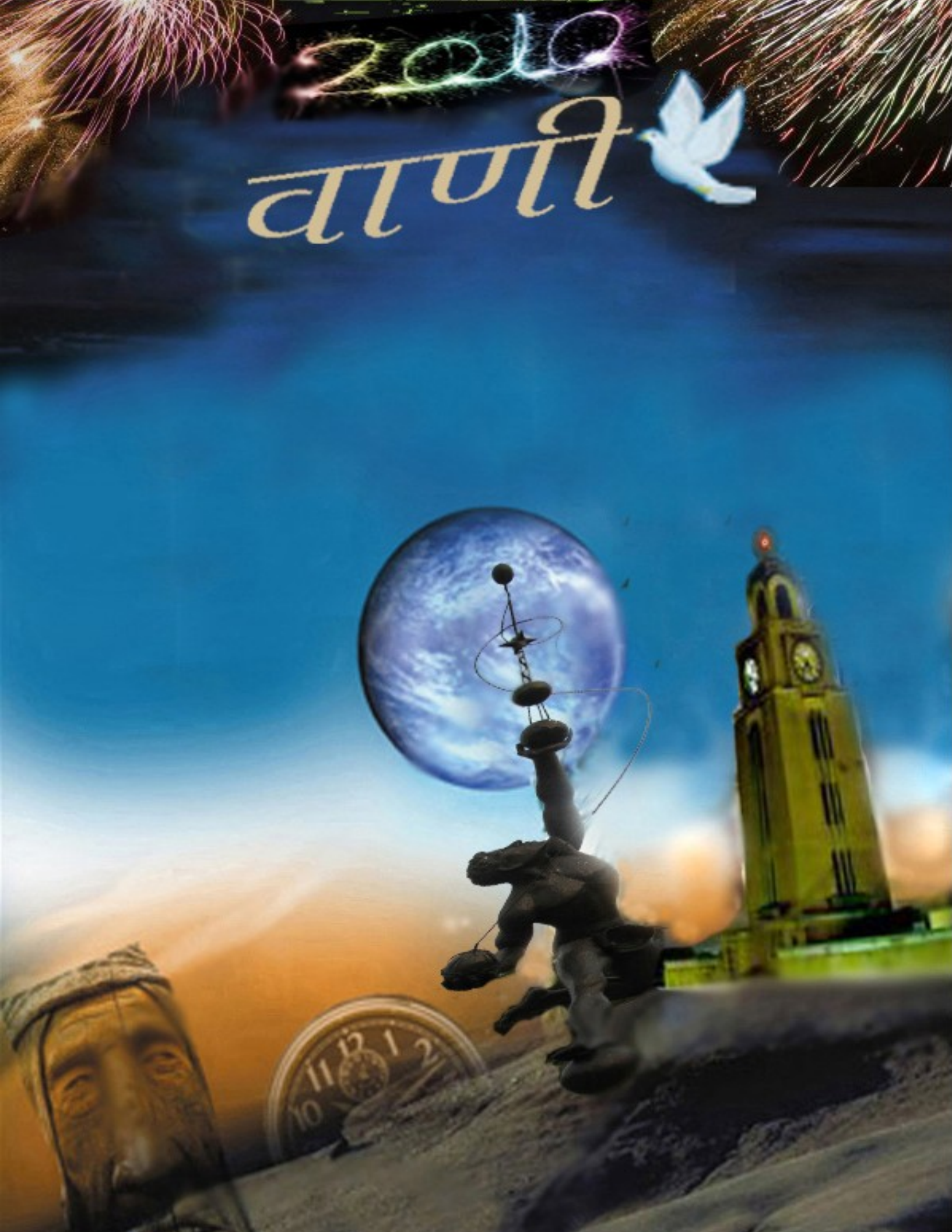
वाणी

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

वाणी

अभिव्यक्ति के अनोखे रंग

2010

हिंदी प्रेस क्लब, बिट्स पिलानी प्रस्तुति

संपादक : लोकेश राज || सह संपादक :हिना जैन

BIRLA INSTITUTE OF TECHNOLOGY & SCIENCE
PILANI – RAJASTHAN , INDIA - 333031

Prof. L.K, Maheshwari
Vice-Chancellor

Phone: +91-1596-242090
FAX: +91-1596-244875
E-mail: vc@bits-pilani.ac.in
Web: www.bits-pilani.ac.in

17.04.2010

सन्देश

साहित्य समाज का दर्पण है| समसामयिक विषयों पर समाज के विचारों को प्रतिबिम्बित करने का सुगम एवं समक्ष माध्यम है| 'वाणी' जो बिट्स की वार्षिक हिंदी पत्रिका है, इसी भावना को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है| युवा वर्ग के विचारों को एक नई दिशा व सोच प्रदान करने की क्षमता रखने वाली यह पत्रिका बिट्स परिसर को अधिक प्रखर बनाने में सहायक सिद्ध हो सकती है| विज्ञान व प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे नये -नये आविष्कार व उनकी गति सभी क्षेत्रों को प्रभावित कर रही है| बिट्स की शिक्षा पद्धति सदैव ही प्रगतिशील रही है| इसे और अधिक प्रगतिशील बनाने में और एक नई सोच प्रदान करने में भी 'वाणी' का स्थान अतुल्य हो सकता है |

पत्रिका के प्रकाशन में संपादक एवं संपादक मंडली की भूमिका अहम् होती है| वे यह सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी ऐसी सामग्री प्रकाशित न हो जिससे किसी व्यक्ति विशेष अथवा किसी वर्ग की भावनाओं को ठेस पहुंचे| समाज में सौहार्द का वातावरण अवरित हो, इसी उद्देश्य के साथ वाणी अपनी विशेषता संजोये रख सकती है|

अंततः, मैं सभी विद्यार्थियों व अध्यापक वर्ग को उनके प्रयास के लिये हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका आने वाले वर्षों में भी इसी प्रकार से बिट्स के श्रेष्ठ लेखकों की प्रतिभा को मंच प्रदान करती रहे|

लक्ष्मीकांत माहेश्वरी

प्रिय पाठकों

जिंदगी में कभी कभी आसान चीज़ें ही सबसे मुश्किल लगती हैं| अपनी भावनाओं का इज़हार करना उनमें से एक है| अपने प्रिय से आप न जाने दिन भर कितनी बातें करते होंगे (यह 'प्रिय' कोई भी हो सकता है), पर जब बात आये अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की , उन्हें आप कितना प्रेम करते हैं, यह जताने की, तब मानो शब्द ही नहीं निकलते हैं गले से | यही तो अनोखे रंग हैं अभिव्यक्ति के, जिन्हें हम लाये हैं आप तक , इस वाणी के माध्यम से| वाणी, भावों की अभिव्यक्ति| वाणी, अभिव्यक्ति के अनोखे रंग|

इस कैम्पस में जो पल बिताएं हैं, उनपर यदि लिखने बैठा जाये ,तो न जाने कितनी किताबें बन जाएँगी| यहाँ पर बिताया हुआ हर एक पल एक याद है, जोकि हर कोई अपने दिल में हमेशा के लिए संजो कर रखना चाहता है| आखिर ऐसा क्या दिया है इस जगह ने हमें? उत्तर स्पष्ट है ..दोस्त| जितनी भी मस्ती, जितनी भी खुशी हासिल की हमनें यहाँ पर , उन सभी की वजह बस एक है, दोस्त| और फिर भी हम शायद ही उन्हें कभी इस बात का एहसास दिलाते हों की वे हमारे लिए कितने खास हैं, कितने महत्वपूर्ण हैं| आखिर इतना मुश्किल क्यों है किसी से चंद शब्द कहना ? इसी मुश्किल को आसान करने की एक छोटी सी कोशिश है वाणी 2010|

अपनी मेहनत को एक आकर्षक रूप मिलते हुए देखना कितना सुखद होता है इसका एहसास अब हो रहा है| इन चंद पृष्ठों में न जाने कितनी यादें बसी हैं| कितने दिन लगे कितनी रातें जगी हैं| शुरुआत की वे असंख्य मीटिंग्स , जो कि मुख्यतः फ़ूड किंग में जाकर ही खत्म होती थी | मंदिर के प्रांगण में वह चर्चाएं , रूम में बैठकर वह बहसें, सभी की न जाने कितनी यादें हैं| कितने लोगों का प्रेम व सहयोग है, कितने लोगों की शुभकामनाएं हैं , कितने लोगों का आशीर्वाद है- उन सभी का हार्दिक आभार| खासतौर पर क्लब के सभी सिनिअर्स ,जिन्होंने हमेशा ही हमारा मार्गदर्शन किया है| एवं हमारे अति उत्साही बच्चे- प्रथम वर्षीय छात्र ,जोकि न सिर्फ मनोरंजन के सबसे बड़े स्त्रोत थे, अपितु जिनकी मौलिकता एवं नवीनता में हम अपने बीते हुए कल को देखने की कोशिश करते एवं जिनसे हमें कुछ न कुछ नया ही सीखने को मिलता, वह जो इन तीन सालों में हममें से गुम हो गया है शायद| इनके बिना तो निश्चित रूप से वाणी का स्वर इतना मज़बूत न हो पाता|

अब जब यह दिन खत्म होने को हैं, जब हम अपनी अपनी राहों पर अकेले बढ़ने वाले हैं, तब इन दिनों की जो यादें हम अपने साथ रखेंगे, उनका हिस्सा है यह वाणी| इसमें आपके ही अपने मित्रों की रचनायें हैं , उनकी सोच है , उनके वो विचार हैं, जिन्हें वे शायद जुबां से व्यक्त नहीं कर पाए.. उसी का माध्यम है यह वाणी| सो इसे मात्र एक किताब नहीं , बल्कि अपने दोस्तों की एक सौगात समझ कर पढ़िए, आप निश्चित रूप से इसे पसंद करेंगे ..आपके सुझाव और विचार आमंत्रित हैं ..|

लोकेश राज

अंदर के पृष्ठों में ...

कहानियाँ/ लेख

इत्तेफाक की मौत (*शैलेश झा*)..............................1
प्रण(*रोहन महाजन*)......................................6
रोटी(*निशांक वार्ष्णेय*)..................................6
परिवर्तन(*पूजा अग्रवाल*)....................................7
झूमने वाली औरत (*कजरी वर्मा*)................................9
सुट्टा मिल गया (*सुदीप गुप्ता*)...............................13
अंधा (*प्रतीक महेश्वरी*)..................................16
भारतीय संस्कृति (*विकल्प खंडेलवाल*).........................19
माँ(*लोकेश राज*)..23
आपत्ति(*प्रतीक माहेश्वरी*)....................................30
मुखबिर(*विश्वमित्र बेलसरे*)....................................32
कायाकल्प(*देविका सांगवान*)..................................36
लव आज कल (*लोकेश राज*) 44
पंचवर्षीय योजना (*निरुपम आनंद*)———————————-46

कवितायेँ

चलते रहना है (*आयुष गुप्ता*)— -———3
क्षितिज (*अलक्षित त्रिपाठी*)———4
अश्क (*सोनल गर्ग*)——————-—-5
इंतज़ार(*निमिष त्रिपाठी*)———5
मायाजाल (*हर्ष ठाकर*)———-—-8
किताब (*सहर्ष चोरडिया*)———12
कालेज के दिन (*आयुष अग्रवाल*)—-12
क्यों (*धाविश जैन*)——————-14
हिंदी (*मृगांक गुप्ता*)——————15
वक्त (*रोहित पमनानी*)——————17
आसरा (*डा..संगीता शर्मा*)———18
कैसे (*मुदित गर्ग*)—————— 18
तृष्णा(*हिना जैन*)——————18
तरीका-ए-दौर(*प्रखर गोयल*)——20
बिट्स के मौसम (*राहुल मेहता*)——- 21
कीचड़ के छींटें (*शाश्वत माहेश्वरी*)— 22
सफर का ध्येय (*प्रोफ. पुष्पलता*)——26
क्षितिज (*हिना जैन*)——————- 26
सफलता (*सुमन तिवारी*)——— –-28
इश्क(*पंकज कुमार*)—————— 29
प्यार (*आदर्श स्वयंका*)————30
गर्लफ्रेंड(*गौतम सिंघवी*).————31
परम सत्य(*कौशल पाण्डेय*)———35
पत्र का प्रेम (*वैभव रिखारी*)———38
कहत कबीरा(*लोकेश राज*)———48

विशेष साक्षात्कार

प्रोफ. जी. रघुरामा——————-39
प्रोफ. बी वी बाबू ——————--40

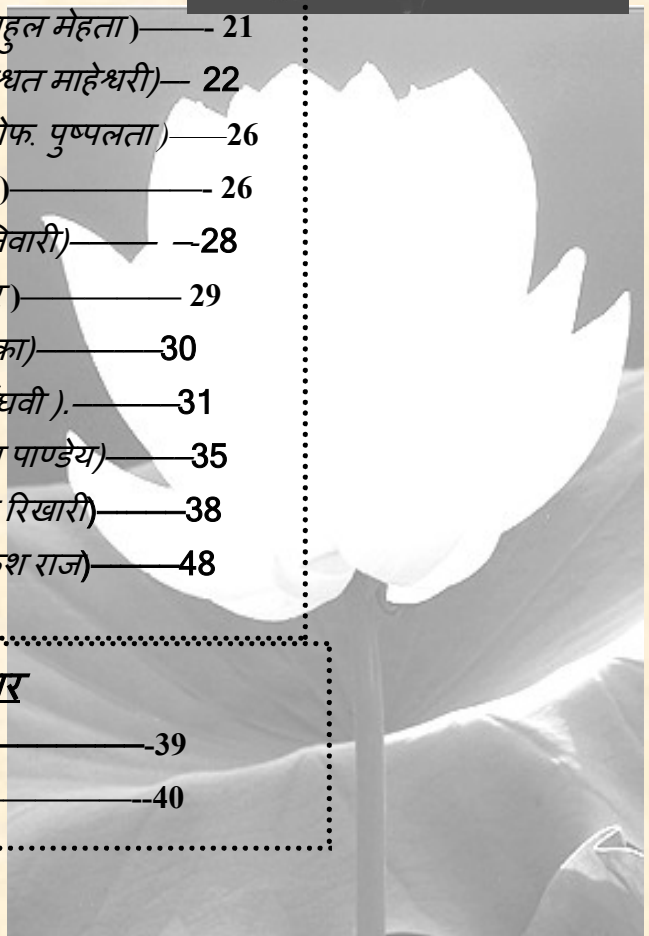

इत्तेफाक की मौत

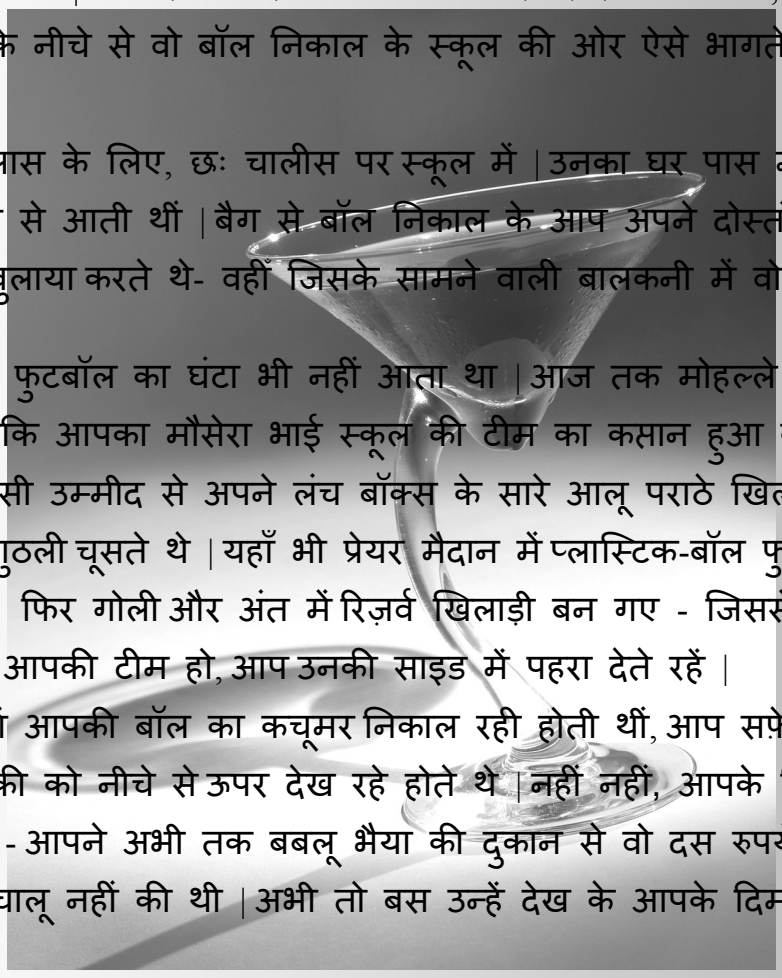

जब आप छोटे थे, तब आपके घर एक लाल बॉल हुआ करती थी | कहाँ से आई ? आप हरदम सोचा करते थे | छोटी सी प्लास्टिक की बॉल ... सवेरे सवा छः बजे, आप अपने छोटे भाई के तकिये के नीचे से वो बॉल निकाल के स्कूल की ओर ऐसे भागते थे, जैसे कोई जरूरी परीक्षा हो|

सात दस की क्लास के लिए, छः चालीस पर स्कूल में | उनका घर पास में ही हुआ करता था, शायद रिक्शे से आती थीं | बैग से बॉल निकाल के आप अपने दोस्तों को स्कूल के प्रेयर मैदान में बुलाया करते थे- वहीँ जिसके सामने वाली बालकनी में वो बैठा करती थीं|

जी नहीं, आप को फुटबॉल का घंटा भी नहीं आता था | आज तक मोहल्ले के लिए भी नहीं खेले, वो तब जबकि आपका मौसेरा भाई स्कूल की टीम का कप्तान हुआ करता था और आप रोज़ उसे इसी उम्मीद से अपने लंच बॉक्स के सारे आलू पराठे खिलाया करते थे और खुद अचार की गुठली चूसते थे | यहाँ भी प्रेयर मैदान में प्लास्टिक-बॉल फुटबॉल टूर्नामेंट में आप पहले बैकी, फिर गोली और अंत में रिज़र्व खिलाड़ी बन गए - जिससे कि मैदान के किसी भी साइड आपकी टीम हो, आप उनकी साइड में पहरा देते रहें |

जब 11 जोड़ी टांगें आपकी बॉल का कचूमर निकाल रही होती थीं, आप सफ़ेद शर्ट और स्कर्ट में बैठी उस लड़की को नीचे से ऊपर देख रहे होते थे | नहीं नहीं, आपके दिमाग में कोई गन्दगी नहीं थी - आपने अभी तक बबलू भैया की दुकान से वो दस रुपये की मैगजीन खरीद के पढ़नी चालू नहीं की थी | अभी तो बस उन्हें देख के आपके दिमाग में "ताल" के गाने बजते थे|

साल गुज़रे, आप गलत संगत में पड़ गए| किसी के बहकावे में आकर पढ़ाई कर ली और इंजनियर बन भी गए! अगले चार साल, आपने अपने लैपटॉप पर हिंदी-अंग्रेजी की सारी रोमांटिक फिल्में उठाकर उनकी पिकअप लाइन्स याद की | उनकी तो खोज खबर भी नहीं रखी | बस एक इत्तेफाक आपके दिमाग में आता था :

" एक दिन, यहाँ से बाहर निकलने के बाद, किसी बारिश के दिन, किसी मेट्रो की भरी सड़क पर... आप ऑफिस से लौटते वक़्त उनसे इत्तेफाक से मिलेंगे | उनके सामने जाके उन्हें वो सब बातें बताएँगे जो आपको आज भी उनके बारे में याद हैं, उनका फेवरेट रंग, उनकी पसंदीदा आइस-क्रीम ... अपना सोने जड़ा क्रेडिट कार्ड लहरायेंगे और उनको सबसे रोमांटिक रेस्तरां में ले जायेंगे | कार होगी, जॉब होगी और उनको बोर भी नहीं करेंगे | आप उनके सामने हर वो डायलोग दोहराएंगे जो पॉल निकोल्स ने जेनिफर हेविट को **" If Only "** में और शाहरुख़ ने रानी को **चलते चलते** में कहे थे | अरे, कुछ भी हो आपने इतनी

की है, इतना इंतज़ार किया है - यहाँ कोई न मिली तो क्या? बाहर आपसे अच्छा कोई है क्या? वो इत्तेफाक भी होगा और वो भी आपकी होंगी |

दिल में ये तो तमन्ना थी कि कुछ भी हो - इतने उल्लू नहीं हैं कि पड़ोस वाले भैया की तरह शादी के दिन भी लाल वाली कुर्सी पर बैठे हुए बगलें झांकते रहें ? बिना कोशिश किये जवान मैदान नहीं छोडेगा ! और वो तो मामूली फार्मा वाले थे, आप इंजिनियर हैं - समाज में आपकी तस्वीर अख़बार में छपती है | शायद आपको पता नहीं था कि उसी दिन आप अपने जान-पहचान वाली हर लड़की के लिए इंजीनियरिंग वाले भैया हो गए थे | आपकी भावनाओं की कद्र किसने की है?

एक दिन वो इत्तेफाक हुआ !!

बारिश हो रही थी | 14 घंटे तक आपको रगड़ने के बाद आपकी कंपनी कैब ने आपको एक अमेरिकन फ़ूड चेन के सामने फेंका और अल्टीमेटम दिया कि आधे घंटे में पेट में खाना ठूस के तैयार रहना, हम यहीं रहेंगे | आप अन्दर गए, उनको देखा, पहचाना और सहम गए | जिस ज़मीन पर आप घर बनाना चाहते थे, उसपर तो बिल्डर का बोर्ड लग गया था - हाथ में अंगूठी ! बिल्डर भी सामने खड़ा था| उसके सामने आप ऐसे लग रहे थे जैसे अर्नाल्ड के बगल में गली वाली रामलीला का हनुमान| चुपचाप बिना कुछ बोले बगल वाली सीट पर बैठे और एक यूथ मैगजीन खोली | आप हरदम सोचते हैं की ये यूथ मैगजीन पढता कौन है?

लोग कैसी कैसी चीज़ों की बात करते हैं - रिलेशनशिप, डेटिंग, ब्रेक-अप, फ्लिंग, वगैरह वगैरह... | ये सब दूसरे ग्रह के लोगों के लिए छपती होंगी, जब आप इस नौकरी से निकलेंगे या निकाले जायेंगे, (जिसका ज्यादा चांस है) आप केवल इंजिनियर मर्दों के लिए यूथ मैगजीन निकालेंगे | सोचा था कि कॉलेज से निकलेंगे तो ये करेंगे वो करेंगे, आप इमरान हाश्मी होंगे.. अरे इमरान हाश्मी ने दस साल कैमरा चलाया है और आपने चार साल

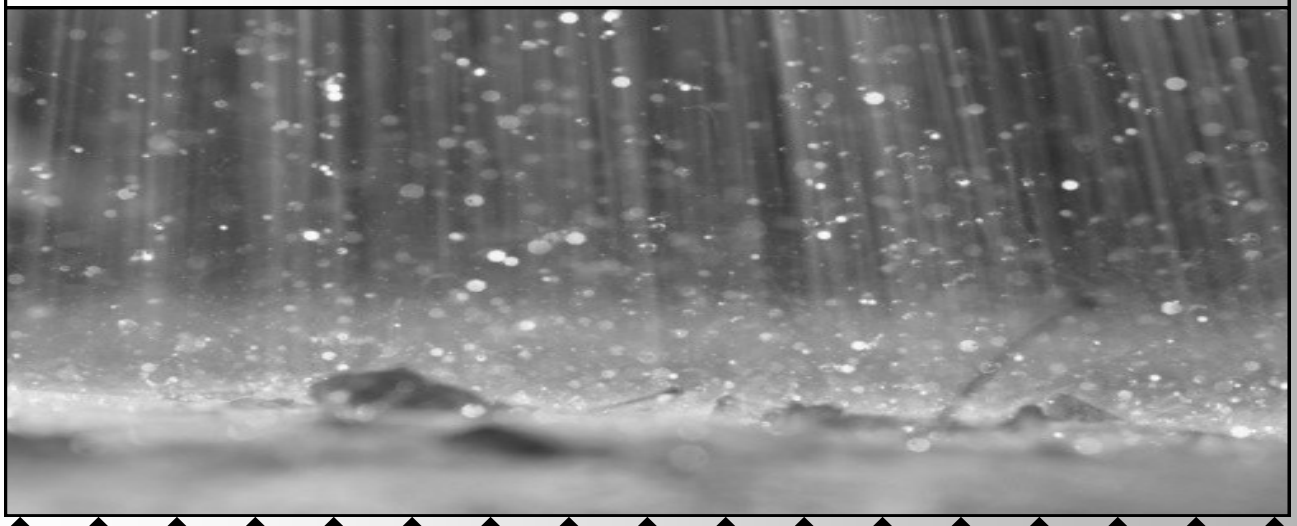

सब कहानियां झूठी हैं|

हिम्मत देखिये ! आपने हिम्मत नहीं हारी | आप कई बार **कभी अलविदा न कहना** देखते हैं, सोचते भी हैं अरे इसमें भी क्या बुराई है | आगे दस सालों में जो हुआ, वो एक डरावना सपना था | अरे फार्मा वाले भैया तो बगलें झांकते थे, आपने तो उस दिन काला चश्मा ही पहन लिया था ! आगे जो हुआ, बस सब भगवान की मर्ज़ी थी |एक दिन आपके लड़के ने आपको जगाया - कोई आपसे मिलने आई है | वो आपकी पत्नी के साथ बैठी थीं, आपको देख के उन्हें लगा कि शायद गलत पते पर आ गयी हैं | आप बिलकुल **दसविदानिया** के विनय पाठक लग रहे थे, पहचानना मुश्किल था | उन्होंने मुस्कुराकर आपके बेटे को एक गिफ्ट पैकेट दिया | कहा - " बेटा ये तुम्हारे लिए ! " आपने सोचा- काश ! पहला शब्द सच्चा होता | आप अन्दर गए |
देखा, बेटा पैकेट खोल रहा है | उसमे से एक प्लास्टिक की बॉल निकली, एकदम लाल | आपका इत्तेफाक मर चुका था | और आपको पता चल गया था कि वो बचपन वाली बॉल आपके घर में कहाँ से आई थी |

– शैलेश झा

चलते रहना है ..

चलते रहना है
सोचा बहुत है तूने ,
अब तुझे कुछ करना है |
वक्त मिले तो थमना ,
वरना तो चलते रहना है |

हद नहीं है तेरी कोई
सबसे आगे बढ़ना है |
या तो हासिल कर मंजिल ,
या सपनो को कुचलना है |
हवा है तू तुझे आंधी में बदलना है |
वक्त मिले तो थमना ,
वरना तो चलते रहना है |

माना अकेला है तू
पर तुझे करोंड़ो से लड़ना है |
पीछे हटना तेरी शान नहीं ,
तुझे आगे आकर अड़ना है
जिद है ये तेरी और
तुझे कुछ नहीं समझना है
दीपक है तू तुझे सूरज में बदलना है |
सोचा बहुत है तूने अब तुझे कुछ करना है |
वक्त मिले तो थमना
वरना तो चलते रहना है |

– आयुष गुप्ता

अवसर उनकी मदद कभी नहीं करता जो अपनी मदद स्वयं नहीं करते।

क्षितिज

रात्रि के इस काले सन्नाटे में
मैनें सुनी आवाज़
आवाज़ की मानों झंकृत होते साज़
हो अलंकृत साज़
स्पष्ट न होते हुए भी मधुरता
की मूरत
आवाज़ कि अद्वितीय रूप से
शांत कोमल कान्त सूरत
अक्षपटल पर अब उभर रही है
एक धुंधली छाया
अनस्पष्ट है नाक-नक्श फिर भी
है मोहक माया
नख से शिखा तक स्थित प्रज्ञा
वस्त्र अनुपम श्वेत
नग्न पाँव और बिखरे केश
निश्चित ही है अद्वैत
खुली आँखों से मैं यह स्वप्न देख रहा हूँ
चेतन अवस्था में भी खुद को चेतना से रिक्त पा रहा हूँ
कुछ- कुछ चेतना में लौट रहा
हूँ अब
शायद इस पल पहचानता हूँ उसे
जो छाया थी तब
अब मुझे विश्वास है क्षितिज के अस्तित्व पर
क्योंकि व्योम धरा से अलग जान पड़ता है
क्षितिज फिर भी दोनों का अनजान मिलन स्थल होता है
विरह रात्रि का कोसों सन्नाटा दीख पड़ता है
मगर हृदय में एक अनकहा क्षितिज होता है

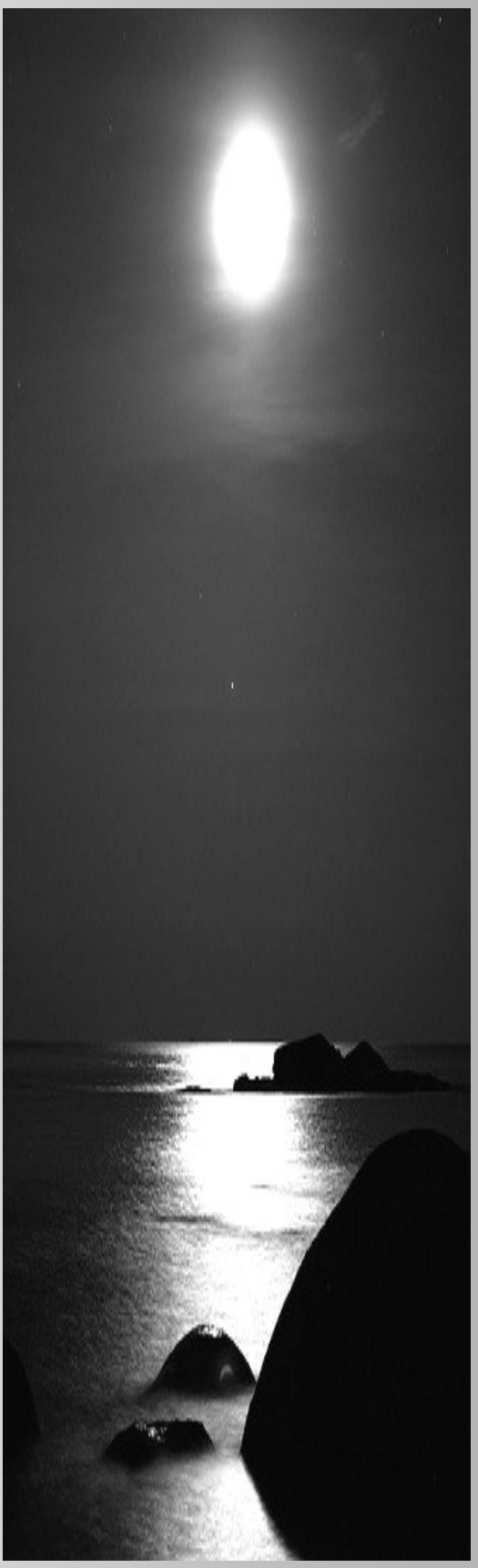

अलक्षित त्रिपाठी

अश्क...

जिनके गुलशन में कांटे होते हैं
वो फूलों की आस नहीं रखते
अश्क बहते हैं जिनकी आँखों से
वो मुस्कुराहट की चाह नहीं रखते
मंजिल जिनकी दूर होती है
वो रास्तों की परवाह नहीं करते
जिसने देखी नहीं है कभी खुशियाँ
वो आहों को महसूस नहीं करते
जिन्होंने छुआ न कभी आसमां
वो तारों को देखा नहीं करते
जमीं पर चलने वाले लोग
पत्थरों पर चलने से डरा नहीं करते
पानी में बहने वाले लोग
किनारों को ढूँढा नहीं करते
कोशिश करने वाले लोग
निराशाओं से हारा नहीं करते
होना होता है वही होता है जिंदगी में
फिर भी हार कर जिंदगी से हम बैठा नहीं करते

– सोनल गर्ग

इंतज़ार...

ख्वाबों के जहाँ में ख्वाहिशों का एक आशियाँ हमने भी बनाया था,
मोहब्बत और चाहत के रंगों से जिसे सजाया था,
तुमने आकर तब हकीकत की बुनियाद रखी थी....
क्यूंकि हमारा हर ख्वाब तो तुममे ही समाया था.....
आज भी हमारे पैरों के निशाँ उन जगहों पर होंगे,
कल जहाँ हम साथ-साथ चले थे.....
मैंने तुम्हारा हाथ अपने हाथों में लिया था,
और तुम्हारे कदम मेरे कदमों के पीछे पड़े थे,
फिर न जाने क्यूँ तुम्हे देख कर मैंने अपनी पलकें झुका ली थी,
आज जब नज़रें उठाई हैं तो पाया.....
तुम तो सनम आगे बढ़ गए .....
किसी का हाथ थाम
पर हम बाहें फैलाए तुम्हारे इंतज़ार में वहीँ खड़े थे .....

–निमिष त्रिपाठी

प्रण

अपने भाग्य को कोसता हुआ संदीप तेज़ कदमों से परीक्षा कक्ष से बाहर निकला | उसका मन तो बालक की तरह भयभीत था कि कहीं इस बार परीक्षा में ज़ुक न आ जाए | उसे मन ही मन अफ़सोस हो रहा था ही कि कल लैपटॉप पर फिल्म देखने के बजाये पढ़ लिया होता तो आज इतनी बुरी हालत न होती | पर इस आत्मग्लानि से अधिक शर्मिंदगी इस बात की थी कि आज उससे एक सवाल भी पूरा हल न हो सका | यही सब सोचते हुए उसके कदम उसे कब भोजनशाला ले आये उसे पता ही न चला | पर आज खाने का निवाला संदीप के गले से नीचे न उतर सकेगा | हद तो यह कि खाने की मेज़ पर भी उसके हॉस्टल के मित्र परीक्षा के एवरेज का हिसाब-किताब लगा रहे थे | पर जब चिड़िया चुग गयी खेत तो पछताने से क्या फायदा | उसने उसी वक़्त प्रण लिया कि अगली परीक्षा में वो पूरी तैयारी के साथ जाएगा | भोजन करके जब संदीप अपनी विंग में पहुंचा तो देखा कि सभी मित्र प्रश्न पत्र पर चर्चा कर रहे थे | सबकी नज़रें बचाते हुए उसने अपने रूम तक पहुँचने की व्यर्थ कोशिश भी की, पर दोस्तों ने उसे पकड़ जो लिया था | न चाहते हुए भी उसे चर्चा का हिस्सा बनना पड़ा | तभी किसी ने विंग ट्रिप का विचार रखा और संदीप इनकार न कर सका |

आज एक हफ्ते बाद फिर एक परीक्षा देकर संदीप बाहर निकला | पर मन में उसके अब भी यही अफ़सोस है कि काश मैंने परीक्षा के लिए पढ़ लिया होता |

– रोहन महाजन

रोटी

वह मुरादाबाद के रेलवे स्टेशन पर बैठा दिल्ली जाने वाली ट्रेन का इंतज़ार कर रहा था | उसके बराबर में एक परिवार बैठा भोजन कर रहा था | तभी वहाँ मैले-कुचैले चिथड़े पहने हुए एक 10-12 बरस का लड़का आया | ''साब !! एक रोटी दे दो न खाने को, बहुत भूख लगी है|''

''भागता है कि नहीं यहाँ से... पता नहीं कहाँ कहाँ से मुँह उठाकर चले आते हैं|''

वो लड़का एक कोने में जा कर बैठ गया |

तभी वहाँ पर एक कुत्ता आ कर दुम हिलाने लगा, तो परिवार के मुखिया ने झट से एक रोटी ली और कुत्ते के आगे डाल दी | – निशांक वार्ष्णेय

अनुशासन परिष्कार की अग्नि है, जिससे प्रतिभा योग्यता बन जाती है।

परिवर्तन

परिवर्तन संसार का नियम है | कुछ परिवर्तन हमारे अनुकूल होते हैं तो कुछ प्रतिकूल | मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है | समाज में रहने के लिये उसे समाज के अनुसार ही चलना पड़ता है | बात करीब 4-5 साल पहले की है | मैं तब आठवीं कक्षा में थी | हमारे पड़ोस में नए किरायेदार आये | अंकल पास के ही एक रेस्टोरेंट में काम करते थे | हमारी बोर्ड की परीक्षायें नज़दीक ही थीं, इसलिए मैं परीक्षा की तैयारी डटकर कर रही थी | एक रात जब मैं पढ़ रही थी तब ही एकाएक मुझे बाहर से शोर आता हुआ सुनाई दिया | पहले तो मैं डर गयी, फिर मैंने मन ही मन हनुमान जी का स्मरण किया | मैंने बाहर से आते हुए शोर को अनसुना करते हुए अपना ध्यान पढ़ाई की ओर केंद्रित करने का प्रयास किया | लेकिन कुछ ही देर बाद वह शोर तीव्र हो गया | मैं डर गयी | मैंने अपने मम्मी-पापा को उठाया और उस शोर के बारे मैं बताया | मम्मी-पापा उठ कर बाहर आये, मैं भी उनके पीछे-पीछे चली गयी | बाहर जाकर देखा तो यह शोर पड़ोस वाले घर से आ रहा था | अंकल ने शराब पी हुई थी और अपनी पत्नी व बच्चों को गालियाँ दे रहे थे, यहाँ तक की अपनी पत्नी पर हाथ भी उठा रहे थे | यह दृश्य देखकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए और मैं रोने लगी | तब पापा ने मुझे अंदर जाने को कहा | मनुष्य जिस परिवेश में रहता है, वह उसी परिवेश के अनुसार ढल जाता है | अतः ये सब न देखना ही मेरे लिए अच्छा था| फिर मैं अंदर आकर सो गयी | सुबह मैं जब बाहर आई तो मेरी नज़र पड़ोस वाले घर पर पड़ी | घर के आँगन में बर्तन बिखरे हुए पड़े थे व सब कुछ अस्त-व्यस्त था | मुझे रात वाली बात स्मरण हो आई | कुछ ही दिनों में हमारी परीक्षाएं शुरू हो गयीं | मेरे पेपर अच्छे हो रहे थे | उन अंकल की बड़ी बेटी भी तो आठवीं कक्षा में ही थी लेकिन मैंने कभी उसे परीक्षा देने के लिये जाते हुए नहीं देखा था | यह शोर तो अब दैनिक हो गया था, लेकिन अब मुझे डर नहीं लगता था | मैं अपनी मम्मी से अकसर कहा करती थी कि ऐसे आदमी को तो जेल में डाल देना चाहिए जिसे अपने बच्चों के भविष्य की परवाह ही नहीं | तब मैं अपने आप को भाग्यशाली समझती थी कि मेरा जन्म ऐसे परिवार में नहीं हुआ |

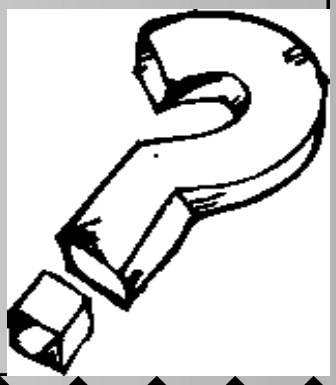

इस तरह मेरी परीक्षाएं समाप्त हो गयीं थीं व ग्रीष्मकालीन अवकाश प्रारम्भ हो गए थे | एक रात मैं छत पर खड़ी हुई थी, मैंने देखा की आज वही अंकल अपने बच्चों को प्यार से बुला रहे हैं, उन्हें मिठाईयां दे रहे हैं व आंटी के लिये साड़ी भी लाए हैं | मैं यह देखकर खुश भी थी और आश्चर्यचकित भी कि यह चमत्कार हुआ कैसे ?? एक-दो दिन बाद मेरी मम्मी मामा के यहाँ शादी में चली गयीं थीं, तो उस दिन शाम को दूध लेने मुझे जाना पड़ा | उन अंकल का रेस्टोरेंट रास्ते में ही पड़ता था | मैंने देखा कि उन अंकल का मालिक उन्हें गालियाँ दे रहा था, क्योंकि उनके हाथ से पानी का ग्लास छूट गया था, जिससे पास ही खड़े एक ग्राहक के कपडे गीले हो गए थे | उस वजह से वह ग्राहक चला गया था | इसलिये उनका मालिक उन्हें नौकरी से निकालने की धमकी दे रहा था | उसने उनकी तनख्वाह का कुछ हिस्सा काट लिया और आगे से कोई शिकायत न आने की हिदायत भी दी | जब मैं दूध लेकर लौट रही थी तब मैंने देखा कि उन अंकल के हाथों में अपने मालिक की तस्वीर थी जिसे वे गालियाँ दे रहे थे, फिर अपनी सारी भड़ास उस तस्वीर पर निकालकर अपने घर की और चले गए | तब मुझे इस परिवर्तन का कारण समझ में आया |

– पूजा अग्रवाल

मायाजाल....

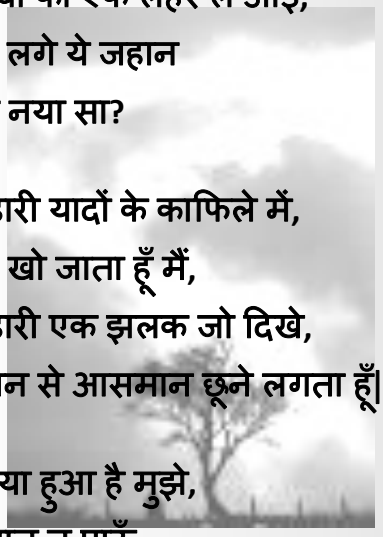

सपनो की बूँद बूँद बारिश
ख़्वाबों की एक लहर ले आई,
क्यों लगे ये जहान
नया नया सा?

तुम्हारी यादों के काफिले में,
कहीं खो जाता हूँ मैं,
तुम्हारी एक झलक जो दिखे,
जमीन से आसमान छूने लगता हूँ|

ये क्या हुआ है मुझे,
मैं जान न पाऊँ,
इस चक्कर से मैं,
निकल न पाऊँ|

तुमने किया है मुझे पे ये जादू,
एक मायाजाल में फँस चुका हूँ
तुम्हारी निगाहों के साये में
मैं फना हो चुका हूँ |

-हर्ष ठाकर

अग्नि स्वर्ण को परखती है, संकट वीर पुरुषों को।

झूमने वाली औरत .....

बात उस समय की है, जब मैं 7-8 साल की रही होंगी, मै अपने मामाजी के घर गई | हालांकि मेरे मामाजी के पड़ोसी मूर्ति -पूजा, वाद्य -आडम्बर जैसी चीजों पर विश्वास नहीं करते थे, लेकिन पत्नी के सामने पूरी तरह भीगी बिल्ली बन जाते थे | मामाजी के घर पर कोई नहीं था, सिर्फ मामाजी और मामी | बड़े भैया इंग्लैंड में थे और छोटे भैया पूना में | मामाजी सुबह ही ऑफिस निकल जाते और मैं घर पर अकेले रहती थी |

मुझे अकेले थोड़ा परेशान देख मामीजी बोली -चलो देवी माँ के दर्शन के लिये चलते है, बहुत सच्ची हैं | हाँलाकि मैं भी मामा की तरह इन चीजों में विश्वास नहीं करती थी, लेकिन मामी की बात टाल न सकी, और शाम होने से पहले मैं मामी के साथ उनके पड़ोसी के घर पहुँच गई | पर मुझे वहाँ कोई मंदिर या पुजारी नहीं दिखा, हाँ दिखी तो एक औरत जो अपने बालों को फैलाये हुए बैठी थी, पास में पूजन -सामग्री और कई चीज़ें रखी हुई थी, और पास ही बैठी औरतें उसे माता-माता कह कर पुकार रहीं थी |

पहले तो मैं उसके झूमने व उसकी हरकतों को देखकर हैरान थी, मुझे डर भी लग रहा था, मैं वहाँ से जाने ही वाली थी कि मामी ने मेरा हाथ पकड़ लिया, और धीरे से फुसफुसायी- "कुछ मांग ले, तेरा भला हो जायेगा ....."| मेरा हाथ पकडे मामी उस झूमने - वाली औरत के पास गईं, और उसके पैरों को पड़कर गिडगिडाने लगी

-"हे माँ! कल मेरे पतिदेव गाड़ी में 15000/ रूपये भूलकर आ गये वो मिल जाएँगे न ?"

अब मुझे पता चला कि मामाजी सुबह से इतना परेशान क्यों थे ?

फिर मेरा ध्यान उस औरत की ओर गया ,उसने तीन जोर -जोर के हाथ मामी की पीठ पर दे मारे, मैं सहम गई पर इतनी भीड़ में मेरा बाहर निकलना मुश्किल था |

"तू चिंता क्यों करती है, तेरे पति फिर ले आयेंगें |"

और फिर वह औरत झूमने लगी | मामी ने मेरा हाथ पकड़ कर उसके आगे कर दिया, मुझसे बोली मांग लो जो मांगना है, पर मै कुछ न बोल सकी |

मामी ने मुझे घूरा और बोलीं – नादान है माँ, इसे आशीर्वाद दे की यू.पी. में पहला स्थान प्राप्त करे |

घर आकर मामी ने मुझे डांटा, ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता, फिर प्यार से समझाकर मुझे बोलीं कि मैं मामाजी को कुछ न बताऊँ | दूसरे दिन सुबह जल्दी उठकर जल्दी मैं छत पर गई और देखा वही झूमने वाली औरत कल के चढाये हुए फलों और मिठाईयों को खा रही थी, मैं उसे अकेले देख थोड़ा डरी, और फिर नीचे भाग गई |उसी दिन उस औरत के घर में हवन था, हवन के लिये हम सभी उसके घर गए | क्योंकि मैं उस रात ठीक से सोई नहीं थी, कब आंख लग गई पता ही नहीं चला |

लेकिन उतनी देर में उस झूमने वाली औरत ने लंबी सी कहानी रच डाली, शोर सुनकर मेरी आँखे खुल गई, देखा तो वह औरत कह रही थी -"देखो !! मेरे ऊपर माँ आती है - जो नहीं मानते वो अब देख ले, इस बच्ची के ऊपर भी माँ आयी है, क्योंकि ये बच्ची माँ को प्यारी लगी | मेरी आँखे खुली देख बोली बच्ची माँ को बुलाओ, आँखे बंद करो |

मै उससे पहले ही डरी थी, मैंने झट से आँखे बंद कर ली | वह मुझे चुनर डालकर न जाने क्या-क्या करने लगी, और मेरी मामी ने यह बात झट से मेरे घर पहुंचा दी |

घर गई तो सभी मुझे घूर रहे थे, मैंने सभी को शांत किया और पूरी बात बता दी | अब तो मैं और मेरी बहन जोर-जोर से मामी की करतूतों को याद करके हँस रहे थे कि इतनी पढ़ी -लिखी और .....| लेकिन जब मैंने 12th में यू.पी. में पहला स्थान प्राप्त किया, तो मुझे उस औरत की बात याद आई - कहीं उस झूमने वाली औरत.....| फिर मैंने सोचा

अगर मैं न पढ़ती या पढ़ाई ही छोड़ देती, तो क्या उस औरत की बात सच होती ?? कानपुर जैसे शहर में आज उस औरत के पास कई पढ़े -लिखे लोग जाते हैं, अपने कार्यों को पूरा करवाने के लिये | और उस औरत के पतिदेव, उन्हें क्या! घर बैठे उनकी औरत 5000-6000 तो महीने में कमा ही लेती है, क्योंकि मेरे ही सामने मामी ने सोने की जंजीर चढ़ाई थी, भैया के इंग्लैंड जाने पर | चांदी की कई चीजे तो वहाँ रोज चढ़ती रहती हैं | वह हर शुक्रवार को अपने भक्तों को बुलाकर अपने ऊपर माता को बुलाती है| अब तो उस इलाके में उस औरत के पतिदेव, वर्माजी को तो कोई नहीं लेकिन माताजी को सभी जानते है |

जब भी मामा के घर जाती हूँ, तो मामी मझे उसके पास ले जाने की जिद करती हैं| लेकिन वही झूमने वाला चेहरा याद कर मैं मना कर देती हूँ, मैं इन चीजों में विश्वास नही करती |

सोचती हूँ अगर हम इन पढ़े -लिखे लोगों को ये कहें कि ये पैसे उस औरत के बजाय किसी गरीब को दे दें, तो शायद ऊनका भला ही हो जाए, पर वो हमें गालियाँ ही देंगे, और वह सोने की जंजीर उस गरीब को नहीं देंगे, क्योकि वह गरीब उसे बेचकर शायद अपने परिवार का पेट ही भरेगा और दुआ देगा, लेकिन वह झूमने वाली औरत शायद उन्हें एक के बदले किसी दिन चार दे दे |

कैसी दुनिया है ये, क्या यही पढ़े -लिखे लोग हैं???

– कजरी वर्मा

पश्चाताप

कर्णवास का एक पंडित महर्षि दयानंद सरस्वती को प्रतिदिन गालियाँ दिया करता था, पर महर्षि शांत भाव से उन्हें सुनते रहते और उसे कुछ भी उत्तर न देते।
एक दिन जब वह गाली देने नहीं आया तब महर्षि ने लोगों से उसके न आने का कारण पूछा। लोगों ने बताया, "वह बीमार है।"

महर्षि फल और औषध लेकर उसके घर पहुँचे। वह महर्षि को देखकर उनके चरणों में गिर पड़ा और अपने असद व्यवहार के लिए क्षमा माँगने लगा। इसके बाद उसका गाली देना सदा के लिए छूट गया।

अभिमान को जीत कर नम्रता जाग्रत् होती है।

किताब

किताब हूँ मैं
तजुर्बा हैं मुझे लोगों का
खूब दुनिया देख चुकी मैं
तुम तो मुझको पढ़ नहीं सके
लेकिन तुमको जान चुकी मैं
किताब हूँ मैं
मुझको बस तू हाथ में तो ले
जान जाऊँगी तेरी फितरत
क्या है मन चितवन में तेरे
दबी हुई सी कोई भी हसरत
किताब हूँ मैं
एक पकड़ जोशीली सी
कुछ कर दिखाने की तरंग
अल्हडपन की अपनी मस्ती
उसी मस्ती में तू मलंग
किताब हूँ मैं
एक वो भारी हथेली
जिम्मेदारी से लदी जकड़
लेकर चलना साथ सभी को
भरे तरु-परिवार की जड़
किताब हूँ मैं
थरथराती निढाल उंगलियाँ
उम्र का आखिरी पड़ाव
जब तुमको एहसास हैं पूरा
अब जल्दी होनी हैं छाँव
किताब हूँ मैं
गुजरी मेरे समक्ष जिंदगी
गज़र-धनु अब तान चुकी मैं
तुम तो मुझको पढ़ नहीं सके
लेकिन तुमको जान चुकी मैं
ज़िंदगी हूँ मैं.....

– सहर्ष चोरडिया

कालेज के दिन

ये कॉलेज के दिन ....

कुछ बातें भूली हुई ,
कुछ पल बीते हुए,

हर गलती का एक नया बहाना,
और फिर सबकी नज़र में आना,

इम्तिहान की पूरी रात जागना ,
फिर भी सवाल देख के सर खुजाना,

मौका मिले तो क्लास बंक मारना ,
फिर दोस्तों के साथ कैंटीन जाना,

उसकी एक झलक देखने रोज़ कॉलेज जाना,
उसको देखते- देखते अटेंडेंस भूल जाना ,

हर पल है नया सपना
आज जो टूटा फिर भी है अपना

ये कॉलेज के दिन
इन लम्हों में ज़िंदगी जी भर के जीना

याद कर के इन पलों को
फिर ज़िंदगी भर मुस्कुराना

– आयुष अग्रवाल

सुट्टा मिल गया .....

युवा पीढ़ी, जिसके कंधे पर पूरे देश के विकास की ज़िम्मेदारी है ,देश का आज, कल एवं भविष्य है , परन्तु कुछ चुनिन्दा युवाओं को छोड़ कर बाकी सभी को इस बात का एहसास कहाँ, क्योंकि उनके अनुसार उन्हें एक बेशकीमती, हवा में उड़ने का एहसास कराने वाली, एक निर्जीव वस्तु जो लोगों को सजीव कर दे, मिल गयी है |

अपने कुछ परिचितों को सिगरेट न पीने के लिए समझाने का प्रयत्न किया तो उनके तर्क इस प्रकार थे, हमारे धूम्रपान करने से प्राप्त टैक्स से देश का विकास हो रहा है, देश की आबादी को रोजगार मिल रहा है, हम अपने शरीर का त्याग करके देश को विकसित बना रहे हैं | हम एक समाज सेवक हैं |

अब उन मूर्ख महानुभावों को कौन समझाए कि अगर समाज-सेवा ही करनी है तो जाओ - गरीब बच्चों को शिक्षा प्रदान करो, लोगों को अपने अधिकारों के लिए जागरूक बनाओ, स्वास्थ्य शिविर लगवाओ, पर्यावरण एवं वातावरण की रक्षा के लिए प्रयत्न करो, परन्तु अपने कमरे में बैठ कर एक हाथ में सिगरेट लिए बेबुनियादी बातें न करो |

कुछ व्यक्तियों ने मज़ाक में कहा, एक चुटकी तम्बाकू की कीमत तुम क्या जानो सुदीप बाबू | इस पर मैंने झट से उत्तर देते हुए उन्हें सिगरेट की परिभाषा कुछ इस तरह बतायी

एक चुटकी तम्बाकू,
कागज़ में लिपटा पड़ा !!
एक छोर पर धुआँ,
और दूसरे छोर पे मूर्ख खड़ा !!!

बहुत से छात्र परीक्षा से पहले रात को जागने के लिए सिगरेट की सहायता लेते हैं और अच्छे अंक भी प्राप्त कर लेते हैं | अब उन छात्रों से ये प्रश्न है कि वो अच्छे अंक क्यों प्राप्त कर रहे हैं ? अच्छी नौकरी के लिए | अच्छी नौकरी से क्या होगा ? अच्छी ज़िंदगी मिलेगी | परन्तु एक रात जागने के लिए जो छात्र अपनी ज़िंदगी के 5-7 दिन कम कर रहे हैं, वो ऐसी अच्छी ज़िंदगी जीने के लिए क्यों प्रयत्न कर रहे हैं जो उन्हें मिलेगी ही नहीं ?? ज़रा सोचिये !!

अंत में मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि सिगरेट के पैकेट पर वैधानिक चेतावनी (सिगरेट कैंसर का कारण बन सकती है) लिखी होने के बावज़ूद पढ़े लिखे लोग इसका सेवन करते हैं | ऐसे लोगों के लिए एक ही उपमा है – यह हमारे समाज के पढ़े लिखे अनपढ़ हैं |.

— सुदीप गुप्ता 'निक्कू'

अति से अमृत भी विष बन जाता है।

क्यों...

उसकी तस्वीर इन आंखों से जाती क्यों नहीं,
उसके सिवा अब और कोई नज़र आती क्यों नहीं |

मिलने के बाद अब ये जुदाई कैसे सहें,
ये बात मेरे दिल को वो बताती क्यों नहीं |

साँसों के साथ अब तो धड़कनें हैं जुड़ चुकी,
दिल-ए-नादान को वो समझाती क्यों नहीं |

जिसका नक्श अब है मेरे मंज़र में बस चुका,
ख़्वाबों में आकर अब वो सताती क्यों नहीं |

रूठने की तमन्ना तो दिल में अब भी है बहुत,
संजीदगी से मुझको वो मनाती क्यों नहीं |

आवाज़ जिसकी रूह की पहचान बन चुकी,
हौले से पास आकर वो गुनगुनाती क्यों नहीं |

लबों का खुश्क होना अब यहाँ किसको है पसंद,
मुझे वो रेशमी ग़ज़ल फ़िर से सुनाती क्यों नहीं|

जिसकी हर अदा पे दोनों जहाँ निसार हैं,
छुपके देखके मुझको वो मुस्कुराती क्यों नहीं |

मेरे गम ख़ुद से बांटने की जिद वो करती है,
अपने आंसू मेरी आंखों से बहाती क्यों नहीं |

मुझे उससे और कोई शिकायत है नहीं लेकिन,
मुझसे वो प्यार करती है ये बताती क्यों नहीं |
उसकी तस्वीर इन आंखों से जाती क्यों नहीं,
उसके सिवा अब और कोई नज़र
आती क्यों नहीं |

— धाविश जैन

हिंदी

मन-मन में बसी हिन्दी

इसमें चंदा की शीतलता, इसी में सुन्दरता सर की।
इसी में रामायण गीता, इसी में मोहम्मद और ईसा॥
ये भावों की अभिव्यक्ति, ये है देवों की भी वाणी।
इसी में प्यार पिता का तो, इसी में लोरी भी माँ की॥

खान जो सूर-तुलसी की, वहीं दिनकर और अज्ञेय की।
इसमें मर्यादा निराला की तो मादकता बच्चन की।
इसमें मस्ती श्री हैं मन की, इसमें श्रद्धा भी है तन की।
कथा ये राम और सीता की कथा ये कृष्ण और राधा की।

सुनो खामोश गलियों में रहने वालो तुम सुन लो।
हिन्दी भारत की भाषा है, और भारत वर्ष हमारा है॥
इसके सम्मान के खातिर, जंग करनी भी पड़ जाए।
पीछे हटना यहां पर तो हमें अब न गवारा है॥

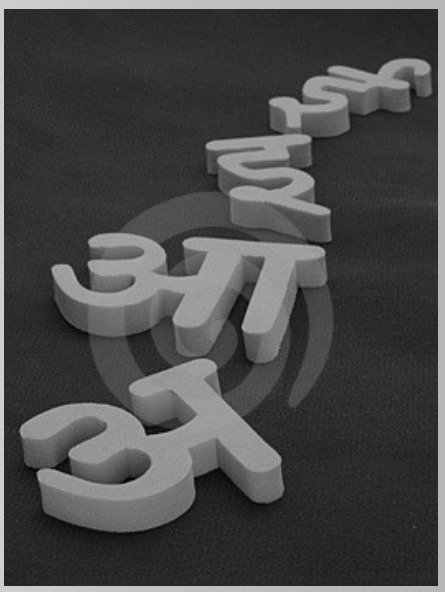

हिन्दी गंगा की धारा है, जो कर देती प्लावित तन मन।
बिना इसके अचल निस्पंदन लगता है सारा-जीवन॥
ये तो वो आग है जिसमें, ढुलकते बिंदु हिमजल के।
ये जो जलदों से लदा है गगन, ये फूलों से भरा है भुवन॥

– मृगांक गुप्ता

दरिद्रों में दरिद्र वो है जो अतिथि का सत्कार न करे।

अंधा

बचपन उस अंधे को देखकर यौवन हो गया था...

जब अंकुर अपनी माँ के साथ मंदिर से बाहर आता तो उसे देख कर विस्मित हो जाता.. उसे दुःख होता...

एक दिन वह अपने दुःख का निवारण करने उस अंधे के पास पहुंचा..

पहुंचा और बोला -" बाबा, अँधा होने का आपको कोई गम है?"

अँधा बोला " बेटा, यह दुःख बताने का नहीं.. यह आँखे किसी बच्चे की हंसी देखने को तरसती है, एक युवती के लावण्य के सुख को तरसती हैं, एक बुज़ुर्ग के बुजुर्गियत की लकीरें उसके चेहरे पे देखने को तरसती हैं... और हाँ इस धरती.. नहीं नहीं स्वर्ग को देखने को तरसती है.. बहुत दुःख है.. पर किस्मत खोटी है बेटा.."

अंकुर आगे बढ़ गया..

वो सोच रहा था -" क्या अँधा होना इतना बुरा है?"

समय भी बढ़ता रहा...

अंकुर अब बड़ा आदमी हो गया.. पर विपरीत इसके, दुनिया में हर चीज़, लोगों की सोच जैसी छोटी हो रही हैं...

आज अंकुर अपनी पत्नी के साथ मंदिर आया है...

वो अँधा वहीं हैं.. उसकी तरक्की नहीं हुई है.. इतने वर्षों तक भगवान के घर के सामने हाथ फैलाना व्यर्थ ही रहा.. ठीक ही कहा है -" भगवान भी उसकी मदद करता है जो खुद की मदद करे"

अंकुर आज फिर रुका और फिर से वही प्रश्न किया -" बाबा, अँधा होने का आपको कोई गम है?"

अंधे ने आवाज़ पहचान ली... बोला बाबू शायद आप बड़े हो गए हैं... आवाज़ से पता चलता है.. पर अब मैं बहुत खुश हूँ.. जहाँ बच्चों के चेहरों पर बस्ते का बोझ झलक रहा है, जहाँ एक-एक युवती के लावण्य पर प्रहार होते देर नहीं लगती, जहाँ बुजुर्गों की बुजुर्गियत वृद्धाश्रम के किसी कोने में पान की पीक के पीछे धूल चाट रही है... जहाँ ये धरती नर्क

बन रही है.. वहां आज मैं बहुत खुश हूँ कि भगवान को आँखें "देने" के लिए नहीं कोस रहा हूँ.. आज आँखें होती तो ऐसी चीज़ों को देखकर खुद ही आँखें फोड़ लेता... आज मैं खुश हूँ.. किस्मत बहुत अच्छी है बेटा.."

अंकुर आगे बढ़ गया..

वो सोच रहा था -" क्या अब अँधा होना अच्छा है?"

– प्रतीक माहेश्वरी

वक्त

हर खुशी है लोगों के दामन में,
पर एक हँसी के लिए वक्त नहीं |
दिन-रात दौड़ती दुनिया में,
ज़िंदगी के लिए वक्त नहीं |
माँ की लोरी का एहसास तो है,
पर माँ को माँ कहने के लिए वक्त नहीं |
जिस पिता ने उँगली पकड़ कर
चलना सिखाया हमें,
आज उनके साथ चलने के लिए ही वक्त नहीं|
सारे रिश्तों को तो हम मार चुके,
अब उन्हें दफनाने के लिए वक्त नहीं |
सारे नाम मोबाइल में हैं दोस्तों के,
पर दोस्ती निभाने के लिए वक्त नहीं |
पैसों की दौड़ मे ऐसे भागे,
कि थकने के लिए वक्त नहीं |

गैरों की क्या बात करें,
जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं |
पराये एहसासों की क्या कद्र करें,
जब अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं
आँखों में है नींद बड़ी,
पर सोने के लिए वक्त नहीं |
दिल है ग़मों से भरा हुआ,
पर रोने के लिए वक्त नहीं |
तू ही बता ऐ ज़िंदगी, इस ज़िंदगी का क्या होगा,
कि हर पल मरने वालों को, जीने के लिए वक्त नहीं |
ऐ मेरे दोस्तों, 'वक्त' पर मैं लिखना तो बहुत चाहता हूँ,
पर क्या करूँ, इतना लिखने के लिए भी वक्त नहीं | **-रोहित पमनानी**

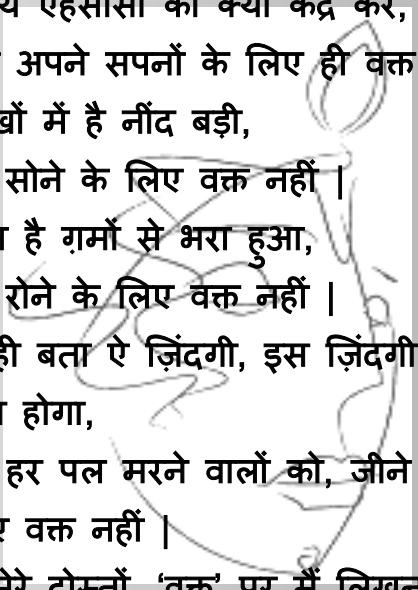

अधिकार केवल एक है और वह है सेवा का अधिकार, कर्तव्य पालन का अधिकार।

आसरा

एक तू ही जिस पर है भरोसा मुझे
सुख दुःख हर हाल में सहारा तू दे
जागते सोते रोम रोम में तू बसा
हर समय तेरा ध्यान सरा
क्यों न तू सही काम करवाता सबसे ?
किस बात पर तू तबाही मचाता?
क्यों न करता सबको खुश ?
ज़रुरी है सहमाना उनको ,
जो पहले से ही डरे बैठे हैं
क्यों लेता उनकी परीक्षा तू ?
क्यों करता दंग हर वक्त पर
फिर बताता रहस्य सबको ?
मैं करता हूँ इतना भरोसा ,
चाहे करदे क्लांत जीवों को ,
मुझे तो मिलती रहेगी छाँव तेरे तनों तले|
चाहे आंधी हो या तूफ़ान
मैं तो बैठा हूँ बहुत शांत |

संगीता शर्मा , असोसिएट
प्रोफ़ेसर , भाषा

कैसे ....

तू साथ है मेरे फिर भी...
दिल में तुझे साथ रखता हूँ मैं.....
तेरी हर अदा को याद करके ....
कभी हँसता तो कभी रोता हूँ मैं....
दिल में अब भी एक उम्मीद लिए....
पल पल तेरा इंतज़ार करता हूँ मैं....
कैसे अपने दिल को समझाऊँ ....
यही सोचता रहता हूँ मैं.....
तू साथ नहीं है मेरे फिर भी .....
दिल में तुझे साथ रखता हूँ मैं.....
कैसे मैं तुझे भुलाऊँ....
आज तुझी से यह पूछता हूँ मैं....
–मुदित गर्ग

तृष्णा !

एक ललक, एक चाह
कुछ उमंग, कुछ उत्साह
और फिर एक उत्कट अभिलाषा,
बेबसी और फिर निराशा
कभी आशाओं का अथाह समंदर है
कभी डर का भयावह मंज़र है
सारी भावनाओं का मेल है
ऐसा ग़ज़ब इस तृष्णा का खेल है !

– हिना जैन

भारतीय संस्कृति—एक विचार

" यूनानो मिस्त्र रोमाँ सब मिट गए जहाँ से,
बाकी अभी तलक है नामोनिशाँ हमारा |
कुछ बात ऐसी है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे ज़माँ हमारा | "

मोहम्मद इकबाल ने अपनी इन पंक्तियों में भारतीय संस्कृति के गौरवशाली इतिहास का वर्णन किया है | लेकिन इक्कीसवी सदी में यदि कोई भारतीय संस्कृति के विषय में चर्चा करता है तो वह प्रशंसा कम निंदा अधिक करता है, और उसका निंदा करना भी स्वाभाविक ही है | पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से हमारी संस्कृति में जो बदलाव आए हैं उससे सभी परिचित हैं |

सिक्के के एक पहलू पर विचार किया जाये तो आज हमारी संस्कृति वैसी नहीं रही, जिसपर हम गर्व कर सकें | आज आवाम् के मन में सुरक्षा का कोई भाव नहीं बचा है | आज उसके दिल में डर रहता है कि कहीं उसकी जेब में रखे पैसों को कोई चाकू दिखा कर लूट न ले जाए | एक पिता के मन में डर है कि कहीं उसका पूत उसके बुढ़ापे का सहारा बनेगा या नहीं | रिश्तों में दरारें आने लगी हैं, विश्वास तो लगभग जड़ से ही उखड़ चुका है | संस्कारों को छोड़ सभी तरफ धन अर्जन की होड़ है | 'बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रुपैया ' ही हमारे लिए आज नैतिक है | अत्यंत दुःख की बात है कि आज एक हिंदी बोलने वाला कॉलेज में पढ़ने वाला विद्यार्थी हिंदी में 1 से लेकर 100 तक गिनती नहीं बोल पाता | इसी परिपेक्ष्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कहा है कि-

“निज भाषा उन्नति है, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को शूल !”

हमारे ही ज्ञान को हम नहीं पहचानते हैं | जैसे कि हमारे देश में प्राचीन काल से ही योग का महत्त्व है, लेकिन आज के लोग उसे पहचानने से इनकार करते थे पुरानी व्यर्थ क्रिया समझ कर | लेकिन जब वही योग ' योगा ' बनकर विदेश में फैलने लगा तो हम उसका गुणगान करने लगे | यह हमारे लिए एक प्रश्न है कि यदि हम आगे बढ़ रहे हैं तो किस

दिशा में ?

दूसरे पहलू की ओर प्रकाश डालें तो माना कि हम पाश्चात्य संस्कृति के चलते अपनी संस्कृति विस्मृत कर चुके हैं, लेकिन जैसा कि इकबाल ने लिखा है कि हमारी संस्कृति मिट नहीं सकती, इसलिए आज भी कहीं हमारे विचारों में व्यवहारों में वही संस्कृति परिलक्षित होती है | आज भी जब कोई मंदिर के सामने से निकलता है तो जाने-अनजाने में उसका सिर झुक जाता है | आज भी चोर और चोरी को गलत माना जाता है और एक अपराधी को मौका मिलने पर जनता मिलकर पीटती है | आज भी हमारी धड़कनें झूठ बोलते समय बढ़ती हैं | आज भी किसी अनजान बड़े को काका, दादा, भैया, बहनजी, माताजी कहकर बुलाया जाता है | और आज भी एक लड़का अपने पिताजी को पिताजी कहकर बुलाता है | माना थोड़ा अंतर आया है, पिताजी 'डैड' और माताजी 'मॉम ' हो गयीं हैं पर आज भी उन्हें मि. अग्रवाल या मि. शर्मा के नाम से लड़का नहीं बुलाता है | और जब तक हमारे अन्दर ये संस्कार हैं तो चाहे किसी भी संस्कृति का प्रभाव पड़ जाये, वे भारतीय संस्कृति को उजाड़ नहीं सकते | यही कारण है कि भारतीय संस्कृति की चिरंतन अविरल धारा आज भी प्रवाहमान है |

सिक्के के दोनों पहलुओं की चर्चा का यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्यपि हम गलत राह पर बहुत तीव्र गति से अग्रसर हैं, परन्तु आज भी आशा की किरण विद्यमान है कि हम फिर आयेंगे और इसी संस्कृति के सहारे प्रगति के पथ पर पग बढ़ाएंगे |

— विकल्प खंडेलवाल

<u>तरीका -ए -दौर</u>

**सोचते हैं हम कुछ और
होता यहाँ है कुछ और |
सदियाँ बीत जाती हैं पर
रह जाती है ज़हन में
बस यही एक फिजा -ए -दौर
करना चाहे मन कुछ और
होता यहाँ है कुछ और |**

**उड़ना चाहता है दिल ओ जहाँ
तैरना चाहती है आरज़ू
उछालना चाहती है ख्वाहिश
पूरी होना चाहें हर गुज़ारिश
फिर भी रह जाते हैं हम
अक्ल के धरातल पर लगते दौड़**

**कभी किया नहीं किसी ने गौर
होता यहाँ है कुछ और |**

**सह जाता है तन बिना कुछ क
हे हो जाती हैं आँखें नम
बिना कुछ सुने या देखे
कितना बेरहम है यह दौर
करवाता है हमसे कुछ और
होता यहाँ है कुछ और |**

**सोचते हैं हम कुछ और
होता यहाँ है कुछ और |**

— प्रखर गोयल

अनुभव को खरीदने की तुलना में उसे दूसरों से माँग लेना अधिक अच्छा है|

बिट्स के मौसम

यह है बिट्स पिलानी
यहाँ का मौसम याद दिला देता है नानी
सर्दी में हम बर्फ से जाते हैं जम
गर्मी में हो जाते हैं पानी पानी |

सर्दी की क्या बात करूँ
आप लोगों का इस ओर ध्यान करूँ
ओएसिस की बहार के साथ
ये देती है दस्तक
काँप जाए रूह और दुखे सारा मस्तक
ठंडी ठंडी हवाएं करती हैं तन के साथ क्रीडा
ढंके हुए शरीर फिर भी हाथ-पैरों में पीड़ा
खूब बिकते हैं भुट्टे
और होती हैं चाय की चुस्कियां
साथ में कोम्प्री एक्साम्स को
लेकर दुःख और सिसकियाँ
कृष्ण गाँधी मार्ग पर चलने वाले निडर बच्चे
काटता सा जाड़ा स्वेट शर्ट के लच्छे
वो रजाइयों की गर्मी
वो न नहाने की बेशर्मी
सभी छात्र बिट्स की स्वेट शर्ट पहन के आते हैं
ऐसा लगता है जैसे
अनेकता में एकता की मिसाल दर्शाते हैं

क्लॉक टॉवर पर छा जाती है धुंध
लगता है जैसे समय ने लीं हो आँखें मूँद
ANC के तो हो जाते हैं वारे न्यारे
क्योंकि हॉट चॉकलेट और गर्म व्यंजन
बिकते हैं उसके सारे
बहती नाक सर्दी बुखार

हमने सर्दी को तो जैसे तैसे झेला
अब देखिये गर्मी की लीला
काला पड़ जाता है तन,
जल जाती है खाल
हाथ पैर पसीने से तर,
मुँह हो जाता है सुर्ख लाल
जलचर बनने का जी करता है
आदमी रूम के बाहर निकलने से डरता है
चिलचिलाती धूप और चुभती हुई किरणें
इनका सामना कर लो तो लगता है
मानसिक संतुलन गिरने |
सूरज की सारी लालिमा शरीर पर आ
जाती है
मेड सी में तो भीड़ सी लग जाती है
सभी लोग सर्दी की बेशर्मी भूल जाते हैं
दो दिन में एक बार की जगह एक दिन
में दो बार नहाते हैं |
ऐसी चलती है यहाँ की लू
व्यक्ति का चैन हो जाता है उड़नछू |
ख़त्म हुआ विश्लेषण
आप दे रहे होंगे मुझे विशेषण
मैं भी हूँ यहीं का एक छात्र
नहीं बनना चाहता हूँ निंदा का पात्र
सर्दी में जमता और गर्मी में पिघलता हूँ
बस अब बहुत हुआ मैं चलता हूँ |

–

राहुल मेहता

कीचड़ के छींटे

मेरे सभी मित्रों की ओर मेरी तरफ से -"कीचड़ के छींटें "
वो गीली है, मठ्मैली है, मिट्टी की काली थैली है|
वो कीचड़ है, हर नुक्कड़ में, हर गलियारे में फैली है |

उसकी चपेट में आज सारा संसार है |
फिर भी सब कहतें हैं, हमें 'कीचड़' से प्यार है !

भंवरों को होती जैसे फूलों की प्यास है ,
कीचड़ को फिसलने वाले की आस है |

कीचड़ में सन के जब घर वापस आते बच्चे हैं-
तभी तो माँ कहती है ,"बेटा दाग अच्छे हैं!"

मत करो उपहास कीचड़ का !
वो तो हमारी मैय्या है|
उगते हुए कमल की-
वही तो रखवैय्या है |

बारिश में कितना भी खेलो,
कुछ रह ही जाता है
सच है, कीचड़ के छीटों के बिना,
मज़ा कहाँ आता है?

-शाश्वत माहेश्वरी

अकेली आँख ही बता सकती है कि हृदय में प्रेम है अथवा घृणा।

माँ .....

(यह कहानी मैंने बचपन में किसी कक्षा में हिंदी की पाठ्यपुस्तक में पढ़ी थी, तभी से यह मेरे जेहन में रही है | बस उसी कहानी को अपने शब्दों में प्रस्तुत कर रहा हूँ -लेखक)

प्लेन की खिडकी से बाहर उसने सूर्य को क्षितिज में समाते हुए देखा| पर आज उसकी खुशी का कोई क्षितिज ही नहीं था | आने वाले पलों के बारे में सोचते हुए मन की मंद मंद मुस्कुराहट कब उसके चेहरे पर आ गयी ,उसे पता ही न चला | वह तो जब परिचालिका ने उससे चाय के लिए पूछा तब अचानक से उसकी तन्द्रा भंग हुई और वह अपनी सोच से बाहर आया| सामने लगी स्क्रीन पर उसने देखा, अभी अपने गंतव्य तक पहुँचने में उसे 2 घंटे और शेष थे | उससे सब्र नहीं हो रहा था, पर जिस तरह से इतने दिन बीते थे वैसे ही ये कुछ घंटे भी बीत जायेंगे, उसने सोचा |

6 महीने पहले की ही तो बात थी, जब वह काम के सिलसिले में इसी प्लेन से उस स्थान पर गया था, पर दूसरे दिन ही एक भीषण कार दुर्घटना का शिकार बन गया था | उसे कुछ भी नहीं याद था, ध्यान था तो सिर्फ सामने से आता हुआ अनियंत्रित ट्रक और दो पलों का वो सब कुछ खत्म होने का भय, पर उसमें सिर्फ अपने लिए ही डर था| यह एहसास उसे उन दो पलों में भी कचोटने वाला लगा था | पर वह और किसके लिए भयभीत होता ? आखिर उसका था ही कौन?

माँ के प्यार के लिए वह जितना तरसता था, उतना शायद और किसी के लिए कभी सोच भी नहीं सकता था | बचपन में ही उसके ऊपर से मातृ छाया दूर हो गयी थी|वह मात्र एक साल का था, जब माँ का स्वर्गवास हो गया था | माँ की यादों के नाम पर भी उसके पास कुछ नहीं था| पिता तो हमेशा से ही रहकर भी अदृश्य से थे| कभी भी घर के मामलों में उन्होनें कोई रूचि नहीं ली थी | परिवार के लिए सिर्फ धन कमाना ही उनका जीवन था | प्यार के दो पल भी कभी उनके पास न थे|भाई बहन कोई थे नहीं | अतः उस दुर्घटना के वक्त उसे इस बात का एहसास हुआ कि उसके जीवन में कितना सूनापन है|

अस्पताल में जब उसकी आँख खुली, तो यह समझने में ही उसे कुछ पल लगे कि वह भीषण दर्द उसके शरीर का था या मन का | शायद दोनों का था | वह जीवित था| पर उसे इस बात की कोई खुशी नहीं था| था तो बस उस कमी का भीषण एहसास | ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो ह्रदय में एक बड़ा सा छेद कर दिया हो, अजीब सा दर्द महसूस हो रहा था| पल पल मानो छेद बड़ा होता हुआ सा प्रतीत हो रहा था | उसके पिता आये थे ,पर दवाईयों एवं इलाज़ का बिल भरने के पश्चात उन्हें काम के सिलसिले में जाना पड़ा| उसे

वार्ड में उसे दाखिल करवा दिया था | दोस्त यार के जाने के बाद, वह अकेला था | ऐसे में उसकी मुलाकात हुई 'माँ' से ..

वह उसके वार्ड की नर्स थीं| करीब 30 सालों से उसी अस्पताल में काम कर रही थी | सभी उन्हें सिस्टर बुलाते थे | उसने पहली बार जब उन्हें देखा, तब वे किसी मरीज की पट्टी बांध रही थी | जब वे उसके पास आई, और उसकी आँख में आंसू देखे, उनके हाथ स्वतः ही उसके चेहरे पर पहुँच गए और उसके आंसू पोंछने लगे | इस मातृत्व भरे नए स्पर्श से उसे अच्छा लगा| सिस्टर ने उसे हिम्मत दी, जीवन का अर्थ समझाया, जीने का तरीका सिखाया, बीती बातों को भूलने का महत्त्व बताया| उसने भी अपनी समस्याएँ बताई एवं उन्होंने बड़े ही ध्यान से सुना| उसे रास्ता दिखाया, आशा की सुनहरी किरणें दिखाई | इस मुलाकात के एक सप्ताह बाद ही वह उन्हें माँ कह कर बुलाने लगा था| उन्होनें भी इस संबोधन को बहुत प्रेम से स्वीकार किया था| वह उसे माँ जैसा ही लाड़ करती, उसके सर में उंगलियां फिराती, उसकी बातें सुनती ध्यान से, उसे जीने की राह दिखाती व् उसकी सभी दुविधाओं का निवारण करती| उसे तो जैसे नया सहारा मिल गया था | उसने सोचा की माँ अगर होती तो शायद ऐसी ही होती | उनके आने से उसका जीवन फिर से प्रकाशित सा लगता था| वह रोज माँ के आने की प्रतीक्षा करता एवं उनसे अपनी बातें कहता, अपनी इच्छाएं ,अपने सपने सब बताता | उसनें उन्हें अपनी माँ मान लिया था, और वे भी उस पर बहुत स्नेह बरसाती थी | इस प्रकार कब 4 महीने गुजर गए पता ही न चला, और वह दवाइयों की वजह से कम और माँ के प्यार की वजह से अधिक, पूर्ण रूप से कुशल हो चुका था| आज वह अस्पताल से जा रहा था | हालाँकि उसके दिल का वह छेद काफी हद तक भर चुका था, पर आज माँ से दूर जाने में उसे अच्छा नहीं लग रहा था | पर फिर भी उनके होने का एहसास ही काफी था, और फिर वह उनसे मिल भी सकता था, कालांतर पर यहाँ आकर | अश्रुपूरित नेत्रों से उसने विदा ली थी, माँ ने भी भविष्य के लिए आशीर्वाद देकर उसे इज़ाज़त दी थी|

यह सब सोचते सोचते उसे एहसास ही नहीं हुआ की कब वह प्लेन से उतरा और टैक्सी लेकर उसी अस्पताल के सामने पहुँच गया था| आज करीब 2 महीने बाद वह माँ से मिलने उसी अस्पताल जा रहा था | इसी लिए उसकी खुशी का कोई छोर नहीं था | माँ के ममत्व भरे कोमल हाँथों के स्पर्श के लिए वह बहुत बेचैन था | उस पल की कल्पना वो न जाने कितनी बार कर चुका था जब माँ उसे देख कर खुशी से उसे गले से लगा लेंगी ,एवं रेगा| यही सोचकर उसने अंदर प्रवेश किया एवं उनके वार्ड की ओर कदम बढ़ाये|

लेंगी ,एवं वह भी फिर उनसे इतने दिनों की बातें करेगा| यही सोचकर उसने अंदर प्रवेश किया एवं उनके वार्ड की ओर कदम बढ़ाये|

जैसे अचानक से ही सूर्य निकलकर रात्रि का अँधेरा खत्म कर देता है, वैसे ही अचानक से सामने माँ को आते हुए देखकर वह भाव विहल सा हो गया | उसे समझ नहीं आ रहा था की उनसे क्या बोले | वह ठीक उसी की ओर आ रहीं थी|

पर यह क्या.. वो तो उसके बगल से निकल गयीं ..नहीं नहीं ..कुछ गलती हुई है शायद, मैं दिखा नहीं होंगा उन्हें, उसने सोचा | उसने बिना एक पल गवाएं पुकारा, माँ | पर शायद वो आगे बढ़ चुकीं थी सो उन्हें सुनाई नहीं दिया होगा, सो वह उनके पीछे गया, एवं आगे से जाकर उसने पुकारा, ''माँ, मैं हूँ, आपका बेटा'' .. वे एक पल को ठहरी ..उसे देखा और कहा.. '' ओह .....कैसे हो बेटा ..तो तुम पूरी तरह से सही हो गए ..अच्छी बात है ..ध्यान रखना अपना, अभी मैं चलती हूँ | मरीजों की दवाई का वक्त हो रहा है'' .

..और वे आगे बढ़ गयीं | वार्ड में एक बेड के पास जाकर उन्होनें मरीज को दवा दी एवं प्यार से सर पर हाथ फेरा |

उसने मरीज़ की दर्द से भरी आवाज़ सुनी ''माँ'' ....

उसके दिल में एक और छेद सा बन गया था ..और वह पहले वाले से भी गहरा प्रतीत हो रहा था |

-लोकेश राज

आपदा हमें अपने जीवन की गहराइयों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

सफ़र का ध्येय

इस जहाँ से , उस जहाँ तक का
सफ़र कितना लम्बा
कितना मुश्किल
कहने को यूँ तो पड़ाव भी कुछ कम ही
दौड़ती भागती इस ज़िन्दगी में
सब कुछ है, पर कुछ भी नहीं

भूले भटके से मैं जो
बैठा कभी पास अपने
घबराहट , बेचैनी के सिवा कुछ साथ नहीं अपने
क्या है यह ? क्यों है यह ?
सवालों के गुच्छे में निरंतर उलझता मैं
शायद
अधीर मेरे मन को निरंतर है तलाश जैसे
प्यासे को पानी की
भूखे को खाने की
लगता है यूँ बीती है , सदियाँ शायद इसी खोज में
क्या यही नियति है ?
मेरे वजूद की
क्या है कोई ध्येय इस तड़प का
है कोई शायद
अदृश्य , निरंकार
करा सकता है
साक्षात्कार
इस अविरल , अखंड शांति का

— पुष्पलता , एसिस्टेंट प्रोफ़ेसर, भाषा

क्षितिज

क्या वाकई, क्षितिज पर
आसमान झुका है पृथ्वी से मिलने ?
या भूमि को मिली है वो ताक़त
कि उठकर आसमान को छू सके?
अगर ऐसा है, तो क्यों है वो क्षितिज
इतना दूर ?
क्यों है क्षितिज सिर्फ़ एक छल ?
क्यों धरा की हर बेटी को आज भी
सिर्फ़ ख्वाब सा लगता है उपर उठना |
या सोचना की उस नभ का अहं कभी
झुकेगा
क्या सोच कभी बदलेगी ?
या भूमि और आसमान की दूरी पर
हंसता
क्षितिज वहीं रहेगा, जहाँ है..

-हिना जैन

वैभव शर्मा

स्वप्निल गुप्ता

सफलता

जब भी होता हूँ अकेला
एक ही उलझन ने घेरा
कमी थी क्या प्रयासों में ?
जो सफलता ने मुँह फेरा
मेहनत में ही रात बितायी
अपने सपनों की नाव चलायी
नाव को है तूफ़ान ने घेरा
क्यूँ सफलता ने मुँह फेरा?
महत्वाकांक्षा की चादर ओढ़कर
मैं प्रतिबद्धता रूपी आग झेला
अब इस झुलसावे संघर्ष ने
मेरे दृढ़ आत्मविश्वास से खेला
मेहनत थी सफलता की कुंजी
यही थी जीवन की पूँजी
अब लगती निरर्थक बातें
खोखली फीकी और ठगती रातें
जिस मेहनत और महत्वाकांक्षा पर

हुआ करता था मुझे अहंकार
अब थी हो गयी चकनाचूर
जब हुआ भाग्य से साक्षात्कार
भाग्य है अलादीन का चिराग
कर सकता हर मुश्किल आसान
जो चाहो साथ हो जाए
हर सफलता हाथ लग जाए
औरों की सफलता देखकर
मन था मेरा बहुत विचलित
पूरी दुनिया भी अब मुझे
लगती थी थोड़ी सी कलंकित
अब गये सारे सिद्धांत बदल
मैंने की एक और पहल
खुद लगाये लंबे-लंबे पर
मैं था जैसे दुनिया पर
पहुँच जाऊं उस ऊँचाई पर
पहुँचे न भाग्य जहाँ पर
निराशा को दिया मैनें अवकाश
अपनी सफलता पाने तक
वश एक नही चल सकता
औरों के अच्छे भाग्य पर
पर विराज हम सकते हैं
खुद के भी दुर्भाग्य पर
अब तो प्रयासों में हमारे
कहीं भी न कमी होगी
व रूपी मेरी यह पतंग
और भी ऊँचाई पर उड़ेगी
पतंग कटी तो क्या हुआ?
कोई भूचाल तो नहीं आया
कभी तो हमारी जीत होगी
ऐसा विश्वास मन में आया
क्या हुआ जो सफलता ने
था मुझसे अपना मुँह फेरा
वो था और कुछ नहीं
समय का बनता मिटता घेरा

– सुमन तिवारी

अहंकार छोड़े बिना सच्चा प्रेम नहीं किया जा सकता।

इश्क

जब लज्जा की ज़ंजीरों में
मैं जूझ रहा था सब से
तब बाँध के अपने धीरज को
मैंने ये कहा था रब से
वो ही तो मेरा जीवन है
वो ही तो मेरा दर्पण है
मेरी साँसों में हर उसकी
साँसों का मिश्रण है

जग ने ये कहा था मुझसे
मत करना उससे प्यार
हाय ! यही थी मेरी गुस्ताखी
मैंने कर दिया इज़हार
वो थी एक हिन्दू लड़की
और मैं ठहरा मुसलमान
फिर भी उसके दिल की खिड़की
में बस गया था मेरा नाम
घर के बंधन ना तोड़ सकी
घुट -घुट के वो बस रोती रही
और उधर मेरे अब्बा की भी
जाने क्यों खिल्ली उड़ती रही
ऐसा क्या किया था मैंने
कि अब्बा का गुनाहगार हुआ
अम्मी ने खाना छोड़ा तो
भाईजान का गुस्सा अंगार हुआ
पर मुझे तो उसकी चिंता थी
जो अकेली सिसक रही थी

मेरी जुदाई के गम में
दुनिया से नाता तोड़ रही थी
तय कर दी थी ब्याह
की तारीख
ऐसा ना करो तुम सब
मैं ये माँग रहा था भीख
सुन ना सका मेरी फ़रियाद
कोई उन सब में
आई तब अल्लाह की याद
हम दोनों के ज़हन में
ज़िंदा रह कर तो मिल ना सके
मर के ही साथ निभायेंगे
इस जनम तो क्या हर जनम
में हम
इक दूजे के कहलायेंगे
यह सोच कर हम दोनों
अल्लाह के घर पर पहुँच गए
और अपने पीछे इस
लाचार दुनिया को छोड़ गए
अल्लाह ने किया हम पर ये
कर्म
दोनों को दिया एक ही धर्म
अब नए जनम में हम
लहरायेंगे जीत का परचम
प्यार हमारा होगा अमर
दुनिया का अब ना होगा डर |

- पंकज कुमार

आपत्ति

ऋषि फ़ोन पर बात कर रहा था, अपनी गर्लफ्रेंड, प्रीती से..

प्रीती उसे कह रही थी कि वो सुबह जल्दी उठा करे और इसके फायदे और निशाचर होने के नुक्सान बता रही थी..

ऋषि पूरे तन्मयता के साथ सुन रहा था.. आधे घंटे तक सुना..

उनके इस रिश्ते के बारे में ऋषि की माँ को पता था और उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी.. वो प्रीती को पसंद करती थी...शाम को ऋषि ने माँ को बताया कि प्रीती ने कहा है कि सुबह जल्दी उठूं, तो कल से वो जल्दी उठेगा...

माँ ने सोचा, अच्छा है.. कम से कम इस रिश्ते से इसमें कुछ सुधार तो हो है.. खुश हुई..

कहा अगर जल्दी उठने की अच्छी आदत डाल ही रहे हो तो स्मोकिंग भी छोड़ दो..

ऋषि एकदम से पलटा और कहा -" माँ, अब फिर से अपना लेक्चर शुरू मत करो.. "और उठकर चला गया..

अब माँ को आपत्ति हो रही थी.. उन्हें आभास हो रहा था.. एक अंधकारमय भविष्य का..

ऋषि को अपना बेटा कहने में संकोच होने लगा था... पर कुछ कर न सकीं...

–प्रतीक माहेश्वरी

प्यार...

इस तन्हाई में क्यूँ आज इतना खो गया हूँ !..
क्यूँ हर छोटी सी चीज पर यूं बिगड रहा हूँ !!...
क्यूँ मुझे आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा ..
क्यूँ मेरा दिल यूँ तड़प रहा ..
आखिर ये क्या हो रहा है ...
और क्यूँ हो रहा है .
क्या किसी दोस्त से बिछड़ जाने का है गम ..
या उस दोस्ती से ज्यादा उम्मीद से हैं आँखें नम ..
मुझे समझ नहीं आ रहा कि ये क्या है ...
कहीं ये वो तो नहीं है
जिससे मैंने हमेशा इनकार किया है ..
कहीं ये प्यार तो नहीं है ,कहीं ये प्यार तो नहीं है ?..

–आदर्श स्वाइका

छोटी नदियाँ शोर करती हैं और बड़ी नदियाँ शांत चुपचाप बहती हैं।

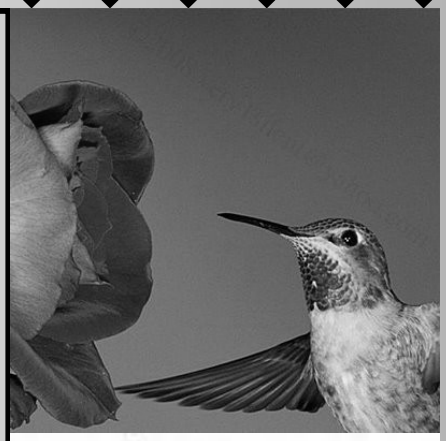

मम्मी का फोन आया - 'बेटा काफी दिन से फोन नहीं किया',
बेटा बोला - मम्मी पैसे नहीं थे इसलिए रिचार्ज नहीं हो पाया |
हमें पता है उसका बैलेंस था कुछ Hundreds में,
वो खर्च हो गया गर्लफ्रेंड के Standards में |

हर दिन वो मिलता था, कॉफी बार में लिए गर्लफ्रेंड,
क्या करे वो बेचारा, आज के जमाने का यही है ट्रेंड |

गर्लफ्रेंड

आधा महीना बीता ही था कि...
पैसे हो गए खत्म |
दोस्तों से उधार मांगने का,
कर रहा था वो बेकार जतन |

किस्मत बहादुरों का साथ देती है और उसका भी दिया,
200/- रूपये मिल गए क्योंकि बहादुरी से उसने घडी को बेच दिया |
आज ज़रूरी था क्योंकि आज है Valentine Day
Propose करना था उसे, और बनाना था Final way,

दिल और दिमाग में था उसका चक्का जाम ,
आज था उसके प्यार का फाइनल एक्ज़ाम |

देखा उसे डांस पार्टी में सजे - धजे ,
सोचा उसने आज तो हो गयी बल्ले - बल्ले |

तेज़ी से जाकर उसने गर्लफ्रेंड से हाथ मिलाया ,
धीमे से गर्लफ्रेंड ने उसे अपने मंगेतर से मिलवाया |
चक्कर खाकर वो टेबल पर गिर पड़ा,
उसके मंगेतर के खाने का बिल भी उसे देना पड़ा |

– गौतम सिंघवी, लेक्चरर, फार्मसी

मुखबिर -एक गुमनाम सिपाही

दर्द से उसकी कराहें तेज़ होने लगीं| मानो बादलों की गडगडाहट से प्रतिस्पर्धा कर रहीं हों | बारिश में पड़ा उसका घावों से छलनी शरीर उसके खून के तालाब में डूबता जा रहा था |

पठान: "जनाब, क्या इसे मार डालें?"

रहीम:"नहीं, इसे यहीं छोड़ दो | जिस तेज़ी से इसके शरीर से खून बह रहा है, यह ज्यादा देर तक जिंदा नहीं रह पाएगा | इस तेज़ बारिश की बूँदें इसके शरीर के लिए ज़हर का काम करेंगी और यह यहीं तड़प-तड़प कर मर जाएगा | यही इन जैसे गद्दारों की सज़ा है | इसकी मौत बाकी मुखबिरों के लिए मिसाल बन जाएगी |"

वे चले जाते हैं |

वो जानता था उसका अंतिम समय आ गया है | उसका दर्द असहनीय होता जा रहा था | पर वह खुश था और उसके चेहरे पर एक विजयी मुस्कान साफ़ देखी जा सकती थी, और क्यूँ न हो, उसने अपना फ़र्ज़ निभा दिया था | उसने मुंबई को एक और आतंकी हमले से बचा लिया था! हाँ, उसने अपने हज़ारों मुंबई वासियों की जान बचा ली थी! उसे इसी पल का तो इंतज़ार था! वो खुश क्यों न हो, उसे शहादत मिलने वाली थी | वो वहीँ दर्द में झुलसता पर ख़ुशी से पागल होता धीरे धीरे अपने अतीत की यादों में खो गया -

उसे तो अपना असली नाम भी याद नहीं! वो याद करता है किस तरह मुंबई में झुग्गी-झोपडी में गरीबी से लड़ता बड़ा हुआ | पेट की आग मिटने के लिए वो छोटी-मोती चोरी-चाकरी करने लगा | एक दिन एक पुलिस वाले (D.I.G. रहमान) ने उससे बोला-

रहमान- "मैं तुम्हारे सारे चोरी के रिकॉर्ड मिटा दूंगा, बशर्ते तुम मेरे साथ काम करने को तैयार हो जाओ |"

उसके पास और कोई चारा भी तो नहीं था |

वो रहमान को 'अब्बा' बुलाने लगा और 'अब्बा' ने उसे नाम दिया -"रेहान" | धीरे-धीरे उसने कई मुजरिमों को पकडवाने में मदद करी |पर इतना जोखिम उठाने पर भी उसे कोई कोई श्री नहीं मिलता | एक दिन वो 'अब्बा से पूछ बैठा-

रेहान -"अब्बा,इतना झोखिम उठाने के बावजूद मुझे सिर्फ 15000/- तनख्वाह मिलती है | कम से कम आप लोगों (पुलिसवालों) को एक वर्दी तो मिलती है | आप लोगों की एक पहचान तो होती है| अच्छा काम करने पर मेडल, प्रमोशन ,ख्याति, इज्ज़त सब मिलता है |

हमारी (मुखबिरों) पहचान छुपाने के लिए हमे कोई मेडल नहीं दिया जाता,कोई मीडिया वाले हमारा इंटरव्यू नहीं लेते| किसी को पता भी नहीं की हम है भी या नहीं ! हमारे जीने में भी कोई यश नहीं और हमे एक गुमनाम मौत ही मरना है|"

रहमान- "इसलिए तो तुम्हारे काम को इंसानियत की सर्वश्रेष्ठ सेवा मन जाता है| तुम लोग भगवान को सबसे ज्यादा प्यारे हो|

रेहान -"इसलिए भगवान हमे इतनी जल्दी अपने पास बुला लेता है | खैर,आप लोग कम से कम डिपार्टमेंट के लोगों को तो हमारे बारे में बता

सकते है ताकि उन लोगों में तो मेरी इज्ज़त हो और कोई गलतफहमी न हो"|

रहमान : "मुखबिर को सबसे ज्यादा खतरा खुद अपने डिपार्टमेंट के लोगो से होता है | जैसा चल रहा है,चलने दो|

रेहान- "इससे तो अच्छा होगा की में आतंकियों के साथ ही मिल जाऊं| कम से कम वहां तो मेरी इज्ज़त होगी और खूब पैसा भी मिलेगा|"

रहमान-" बेटा,हमेशा ये सोचो की तुम कोई काम 'क्यूँ' कर रहे हो न क़ि 'क्या' कर रहे हो | इस दुनिया में नहीं तो भगवान के दरबार में तम्हारे काम की जरूर सराहना की जाएगी | भगवान के घर में देर है अंधेर नहीं|"

(कुछ दिनों बाद)

रेहान को पता चलता है क़ि पाकिस्तान से कोई 'रहीम साब' एक बड़े प्रोजेक्ट के लिए भारत आये है| वो ये बात रहमान को बताता है | कुछ लोग गिरफ्तार भी होते है| लेकिन कुछ दिनों बाद पुलिस क़ि गतिविधियाँ धीमे होने लगती हैं |

(आतंकी कैंप में)

चार साथियों को रहीम मार देता है|

रेहान-"क्या हुआ?"

पठान- मुखबिर थे|"

पठान-"भारत की गरीब पुलिस में कुछ लालची लोमड़ियाँ तो मिल ही जाती है जो पैसों के लिया हमे खबर देती रहती है |"

रेहान -"चलो, अब तो हम आराम से काम कर सकते है "

पठान-"नहीं, अभी भी A.T.S. यूनिट से कुछ मुखबिर हम में शामिल है | उसका एक ऑफिसर रहमान नहीं माना, मर गया साला | हमे सतर्क रहना होगा |

रेहान(चौक कर)-"हाँ !" (अन्दर से टूटते हुआ | उसकी अब वही हालत थी -'धोबी का गधा न घर का न घाट का")

फिर भी वो हिम्मत नहीं हारा | बड़े ही साहस से उसने उनकी यातनाएं सही | लाइ डिटेक्टर पास किया| और उनके प्लान की खबर पुलिस को दे दी |

एक अकेले आदमी ने पूरे मुंबई को बचा लिया | लेकिन इस बीच आतंकियों को उसके बारे में पता चल गया और .....

उसने अपनी अंतिम सास ली. उसकी चेहरे क़ि हंसी फिर भी वैसी ही बनी रही | उसकी और उसके जैसे सभी मुखबिरों की शहादत को हम सब का शतशत नमन !

विश्वमित्र बेलसरे

श्रुति जिभकटे

आरोग्य परम लाभ है, संतोष परम धन है, विश्वास परम बंधु है, निर्वाण परम सुख है।

एक बार एक राही चलता जाता अपने पथ पर,

और उधर सूरज भी बढ़ता जाता ऊपर नभ पर!
धीरे-धीरे गरम हुआ फिर वातावरण समूचा|
और उधरफिर पवन देव ने अपनी गति को रोका|
त्रस्त हुआ जब राही जाकर,

एक पेड़ के नीचे,
बैठ गया व्याकुल होकर
आतुर हो आँखें मीच |

बोला ,हे! सूर्यदेव क्यों इतनी आकुलता दिखलाते?
खुद जलते हो अग्नि में
फिर भूमंडल पिघलाते|

क्या पता हो खुद जलकर जो इतना ताप दिखाते?
और वृथा सृष्टि में इतना हाहाकार मचाते |

राही की बातें सुन,
सूरज ने अपना रथ रोका|

बोला ,पथिक! सुनो बस ये है
मेरा नियम अनोखा:
मैं जलता हूँ तब जाकर,
संसार चक्र चलता है

मेरे ही जलने से,

.पृथ्वी पर सब कुछ फलता है
,मेघ ,तालाब, नदी हैं सब
,मेरे ही दम से

और सृष्टि को भी बाहर लाता
. ही हूँ तम से मैं
,स्वयं जलाता हूँ खुद को
अब तुम ही बोलो इससे
बढकर

मेरे लिए क्या कोई
सच है ?

परम सत्य यह भी मैं बतलाता हूँ तुमको:

जितना भी तुम तपा सकोगे अपने तन को

उतना ही सुख दे सकते हो जन-जीवन को.

कौशल पाण्डेय

कायाकल्प

मैं: आज का तो दिन ही खराब था। न सुबह नाश्ता नसीब हुआ और न ही कोई काम ठीक से हुआ। और सब से बुरा यह कि मुझे यह भी नही पता कि मैं अपने काम के लिए बाहर जा भी पाऊँगा या नही ? कितनी इच्छा थी मेरी सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने की। सब कुछ उल्टा पुल्टा हो रहा है। हे भगवान। यह सब मेरे साथ ही क्यों होता है?

¼तभी कमरा रोशनी से भर जाता है और सब कुछ दिखना बंद हो जाता है। धीरे–धीरे वह प्रकाश सिमट कर एक आकृति में परिवर्तित हो जाता है।)

मैं: हे भगवान! पहले क्या कम परेशानी थी जो एक और मुसीबत आ टपकी। अब तुम कौन हो?

आकृतिः मैं? मैं भगवान हूँ।

मैं: भगवान? कौन भगवान?

आकृतिः वही, जिसें तुमने अभी–अभी पुकारा।

मैं: पुकारा? मैनें तो किसी को नही पुकारा।

आकृतिः तो अभी–अभी किस से बातें कर रहे थे?

मैं: वो तो मैं भ...ग...वा...न – तुम भगवान हो?

आकृतिः हॉ।

मैं: लेकिन तुम कैसे भगवान हो? मैने तो सुना है कि भगवान सालों की तपस्या और अच्छे कर्मों के परिणामस्वरूप दर्शन देते हैं? तो तुम, माफ कीजिए, आप मुझे दर्शन क्यों दे रहे हैं?

आकृतिः तुम, माफ कीजिए, आप। आप परेशान थे, किसी से बात करना चाहते थे। इसलिए मैं आप से बात करने चला आया।

मैं: लेकिन? चलिए ठीक है। बैठिए या खड़े रहिए, आप को तो ज्यादा फर्क नही पड़ता होगा?

आकृतिः क्यों? मैं भी थक जाता हूँ। मैं भी ऐश्वर्य और वैभव चाहता हूँ।

मैं: ऐश्वर्य और वैभव? आप चाहते हैं?

आकृतिः हॉ। क्यों नही?

मैं: आश्चर्य है। अगर यह सच है तो आप कैसे भगवान हैं?

आकृतिः क्यों मैं भगवान क्यों नही हो सकता?

मैं: ऐश्वर्य और वैभव का इच्छुक भगवान? कुछ जमा नही।

आकृतिः क्यों जब इंसान बिना कर्म किए फल की इच्छा रख सकता है, जब इंसान बिना कष्ट उठाए मंजिल पर पहुँचना चाहता है, और जब बिना प्रयत्न किए कुछ प्राप्त नही कर सकता, तो मुझे पूरी श्रद्धा के साथ खरी खोटी सुना सकता है, तो मैं अपनी इच्छाओं के आधिन क्यों नही हो सकता?

मैं: लेकिन हम तो इंसान हैं।

आकृतिः क्या मतलब?

मैं: मतलब? हमें आपने बनाया है, तो आपको हमारी इच्छाओं का मान भी रखना चाहिए।

आकृतिः अच्छा, क्या तुम यह मानते हो कि मैंने तुम्हे बनाया है।

मैं: बिल्कुल।

आकृतिः लेकिन तुम तो किंचित भी मेरी आशाओं के अनुरूप नही हो।

मैं: इसका क्या मतलब हुआ?

आकृतिः मैंने जब इंसान को बनाया तो उसे परिश्रम, इंसानियत, ईमानदारी इत्यादि गुणों से अलंकृत किया था। लेकिन वैसा कुछ मुझे आप में तो नजर नही आया।

मैं: अरे भगवान, कौन से जमाने की बात कर रहें हैं आप? ये सब पुरानी बातें हैं। आज के जमाने में यह सब नही चलता।

आकृतिः ठीक है, लेकिन इसमें मेरा क्या दोष है? जब आप भगवान के बंदे बन कर नही रह पाए तो मजबूरन मुझे इंसानो का भगवान बनना पड़ा। और इंसानों का भगवान होने के नाते मैं भी आपको यह सलाह देता हूँ कि हर चीज के लिए मुझ पर दोष न मंढ़ा करें। आप तो जानते ही हो आज के जमाने में यह सब नही चलता। समझ लिजिए मैं आधुनिक जमाने के इंसानो का आधुनिक भगवान हूँ बिल्कुल तुम जैसा।

मैं: हे भगवान!

˙. **देविका सांगवान** एसिस्टेंट प्रोफ़ेसर, भाषा

विषयों के प्रति आसक्ति मोह उत्पन्न करती है।

पत्र का प्रेम

ओस बिंदु की अंगडाई
देख ..
पत्र स्तब्ध हो कहने लगा ..
"प्रतिबिम्ब की शुद्धता हो " !
या पारदर्शिता की स्निग्धता ?

मैं मृतप्राय सा पड़ा था ...
निशा की गोद में ..
तुम्हारी राह में ..
जगा हुआ था !

तुम शायद आई थी ..
वही पवित्रता की मूर्ति ...
तन मन कंपाते हुए ...
ह्रदय में छाई थी |

मैं सत्य असत्य की दुविधा
में ...
स्वप्न मंजरी में मगन हुआ ..
निशा के आँचल में छुपा ..
संदेह और सघन हुआ |

फिर भी मुझे आभास था ...
परिस्थिति का, उपस्थिति का !
इसीलिए थाम लिया था ...
एक सच्चा प्रयास था .. |

सहसा एक खनक सी ..
वायु की धमक सी,
मैं शांत धैर्य से क्रूर हुआ ...
द्विगुणित हो छत्र बन..
तुम्हारे चहुँ ओर लिपट गया ...
बिना छुए ! तुम सहम गयी !

थपेडों से लड़ मैंने ..
खुद को बस मिटा दिया था ...
जर्जर था पर था कितना खुश ..
तुम्हारा शील बचा लिया था |

प्राण प्रयाण होने को व्याकुल ..
मैंने कुछ पल मांग लिए थे ...
रवि की किरण को पुकार रहा था ...
आये तुम्हें आत्मसात करे |

हे तरंगिनी-भानु की संतान |
मैं अब जा रहा हूँ ..
घायल हो चुका हूँ ...
लेकिन मन में संतोष लिए |

तुम्हें बस ये बताना है ..
प्रेम बहुत है मेरे मन में ..
किन्तु त्याग है ज्यादा शायद !
पाने के भाव का परित्याग किये |
सदियों से मैं लड़ता आया ...
सदियों तक मैं लड़ता रहूँगा ...
बस तुम कुछ पल मेरे आगोश में यूँ ही
बिता कर ...
सरिता रवि से सजे अपने घर में चले
जाना

– वैभव रिखारी

साक्षात्कार — प्रोफ. जी. रघुरामा

सर बिट्स से अपने जुड़ाव के बारे में बताएं |

आईआईएससी से 1987 में पीएचडी करने के बाद मैंने बिट्ससे जुड़ने का फैसला किया| मैं हमेशा से ही ज्ञान बांटने का इच्छुक था और इसलिए मैंने पढ़ाने का निर्णय लिया| बिट्स पिलानी मेरे लिए एक अनूठा अनुभव रहा | चाहे वो यहाँ की खुली और प्रगतिशील शिक्षण प्रणाली हो या फिर यहाँ के प्रतिभाशाली छात्र | मुझे यह जानकार अच्छा लगा कि यहाँ पर शिक्षकों को ही नहीं अपितु छात्रों को भी बहुत स्वतंत्रता मिलती है तथा प्रयोगों और नवीनता को भी काफी महत्त्व दिया जाता है | सबसे अनूठी बात यह थी की बिट्स में उपस्थिति अनिवार्य न होते हुए भी मेरी कक्षाएं छात्रों से भरी रहती थी जो यही दर्शाता है की बिट्स के छात्र स्वयं-प्रेरित हैं | इसकेअतिरिक्त पिलानी चुनने की एक वजह यह भी थी की मुझे कभी भी भाग दौड़ वाली ज़िन्दगी पसंद नहीं थी | मैं हमेशा से एक शांत जगह पर रहना चाहता था |

२. इतने साल बिट्स से जुड़े रहने के दौरान आपने यहाँ पर कौन से प्रमुख परिवर्तन देखे हैं ?

इतने सालों में बिट्स पिलानी ने बहु आयामी तरक्की की है | चाहे वो नए कैम्पस खोलना हो या हमारे ऑफ कैम्पस प्रोग्राम की लोकप्रियता या फिर अनुसंधान में हमारी बढती भूमिका | सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन रहा है हमारे ऑफ कैम्पस डिग्री प्रोग्राम्स के क्षेत्र में |

जब कई साल पहले हमने इसे आरम्भ किया था तब मेरे मन में संशय था पर आज इतने सालों बाद मुझे इसकी आवश्यकता, विशिष्टता तथा महत्व का भली भांति अंदाजा है | पिछले कुछ वर्षों से हमने अनुसंधान के क्षेत्र में भी काफी ध्यान दिया है और उसे बढावा देते आ रहे हैं |

३. आपको बिट्सपिलानी के डाइरेक्टर बनने की बहुत बहुत बधाइयाँ | इस नयी भूमिका में आपकी क्या आशाएं और योजनायें हैं ?

पिलानी के लिए मेरी सबसे पहली योजना यह है की मैं इस कैम्पस की मूलभूत सुविधाएँ बेहतर करूँ तथा पिलानी की भौगोलिक स्थिति से आने वाली समस्याओं के लिए उपयुक्त हल ढूंढ सकूँ | देश भर के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक यहाँ आकर पढाएं यह भी मेरी योजनाओं में शामिल है | इसी क्रम में हमने प्रोजेक्ट **2012** तैयार किया है जिसमे ऐसी कई सारी बातों पर गौर किया गया है और इन्हें पूरा करने के लिए उपाय सोचे गए हैं | आजकल उसी सिलसिले में मैं काफी व्यस्त रहता हूँ |

४. सर हाल ही में आप सभी भवनों में जाकर छात्रों से मिले , उनसे चर्चा की और उनकी समस्याएं जानने की कोशिश की | आप अपने इस उद्देश्य में कहाँ तक सफल हो पाए ?

मेरा लक्ष्य यह था की छात्रों से रूबरू होकर उनके विचार जान सकूँ, कैम्पस में आ रहे बदलाव से उन्हें जोड़ सकूँ तथा समस्याओं पर उनके साथ चर्चा कर सकूँ | मैं इस बात से अभिभूत हूँ की उन्होंने मुझसे खुलकर हर विषय पर चर्चा की| छात्रों ने एक जिम्मेदारी के साथ चर्चा को आगे बढाया और मुझे यह बात बहुत पसंद आई | मुझे इसलीये सभी बिट्सीयंस पर नाज़ है | जहाँ तक सफलता की बात है तो मैं कहूँगा की छात्रों के साथ मेरी यह बैठक **100** प्रतिशत सफल रही | उनसे चर्चा करके मुझे सोचने और समझने की एक नयी दिशा मिली, एक नया दृष्टिकोण मिला

५. हमें पता चला है की आपको संगीत और पुस्तकों का बहुत शौक है | ज़रा उस पर भी हमें जानकारी दीजिये |

संगीत में अगर आप मुझसे पूछें तो मुझे हिन्दुस्तानी संगीत बहुत पसंद है | मैं बचपन से ही मृदुल गीत सुनने का शौक़ीन हूँ | मैंने 6-7 महीने तबला बजाना भी सीखा था परन्तु अभ्यास के लिए ज्यादा समय नहीं निकाल पाया और मुझे यह छोड़ना पड़ा | वैसे हाल ही में मैंने जिम जाना भी शुरू किया है | देखते हैं कब तक जा पाता हूँ |

पिछले कुछ सालों में मैंने काफी साड़ी पुस्तकों का संग्रह किया है | मैं अधिकतर दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं गैर-गल्प ही पढता हूँ |

साक्षात्कार – प्रोफ. बी. वी. बाबू

जैसा कि हम इस बात से अवगत हैं कि बिट्स में इस सत्र कई फेर बदल हुए हैं । इसी कड़ी में एस डब्लू डी के नए डीन प्रोफेसर बी वी बाबू से हमें रूबरू होने का मौका मिला । आइये देखते हैं कि उन्होनें अपने व्यक्तिगत विचार तथा अपने अनुभव को किस प्रकार उन्होनें हमारे समक्ष रखा ।

एच पी सी : सर , आप अपने बारे में हमें कुछ बताएं ।

प्रोफ. बाबू: मैंने अपना बी टेक सन 1983 में ऐ यू विश्वविद्यालय , वाल्टेयर आन्ध्र प्रदेश से केमिकल इंजीनियरिंग में किया । तत्पश्चात एम् टेक भरथियार विश्वविद्यालय कोयम्बटूर से 1985 में पूर्ण किया । उसके बाद 1996 तक गुजरात यूनिवर्सिटी में अध्यापन कार्य किया । उसी दरम्यान 1993 में आई आई टी बॉम्बे से हीट ट्रांसफर में पी एच डी की । फिर 1996 में बिट्स पिलानी से प्रस्ताव आने पर इसमें शामिल,हुआ तथा तब से यहाँ कार्यरत हूँ । यहाँ बिताये हुए अपने पंद्रह वर्षों के कार्य काल में मैंने अपनी रूचि के अनेक क्षेत्रों में कार्य किया है तथा काफी संतुष्ट महसूस करता हूँ । यहाँ मैंने अध्यापन , शिक्षण , अनुसन्धान , परामर्श , तथा प्रशासन सभी कार्यों में यथा संभव योगदान दिया है तथा अनेक अनुभव अर्जित किये हैं ।

एच पी सी: आपके द्वारा किये गए अनुसन्धान के विषय में हमें कुछ बताएं ।

प्रोफ. बाबू : हमने यहाँ अनुसन्धान कार्य को कई चरणों में दिशा देने का प्रयास किया है । मेरी रूचि के मुख्य विषय इवोल्यूशनरी कम्प्यूटेशन ,बायोमास गैसिफिकेशन , तथा पर्यावरणीय अभियांत्रिकी रहे हैं । इसके अलावा मैंने बायोफिल्ट्रेशन , औसीमाइज़ैशन एवं मॉडलिंग साइमुलेशन तथा उर्जा समाकलन एवं विश्लेषण में भी अपना योगदान दिया है । इवोल्यूशनरी कम्प्युटेशन के अंतर्गत किसी कोम्प्लेक्स नौन लिनीयर समस्या का जेनेटिक्स के सिद्धांतों द्वारा हल निकाला जाता है । इनके अलावा हमने करीब 200 अनुसंधानिक पेपर्स भी निकाले हैं ।

एच पी सी : सर आप करीब **15** वर्षों से बिट्स पिलानी में सेवारत हैं । इस समयावधि में आपको क्या क्या परिवर्तन देखने को मिले ?

प्रोफ. बाबू: यदि आप यहाँ आने वाले छात्रों के बारे में जानना चाहते हैं तो मैं अवश्य कहूँगा कि काफी परिवर्तन हुआ है । पहले हम बिट्स पिलानी में बारहवीं बोर्ड मेरिट के आधार पर छात्रों को प्रवेश देते थे । इस प्रकार से हमें देश के सबसे प्रखर छात्र मिलते थे और उनमे से बहुत से छात्र ग्रामीण परिवेश से भी होते थे । 2005 में हमने अपना औनलाइन प्रवेश आरम्भ किया । नयी पीढ़ी के छात्र समकालीन समस्याओं से बहुत अच्छी तरह वाकिफ हैं तथा उनकी विश्लेषणात्मक शक्ति भी कई अधिक है । वे जिस प्रकार के सवाल प्रोफ. के आगे रख कर उन्हें अचंभित कर देते हैं वो काफी प्रशंसनीय है । शहरी क्षेत्रों से आजकल ज्यादा छात्र आते हैं तथा वे काफी स्वतंत्र विचारों एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । मुझे मानना पड़ेगा कि छात्र बौद्धिक स्तर पर काफी आगे निकल चुके हैं । हर तरह के परिवर्तन के कुछ दूरगामी परिणाम होते हैं और हम उन्हें आज देख सकते हैं ।

एच पी सी : आप के अनुसार परिवर्तन की क्या आवश्यकता है ?

प्रोफ . बाबू: समय के साथ परिवर्तन आवश्यक होता है किन्तु यह परिवर्तन सदा सकारात्मक होना चाहिए । मेरा मानना है कि छात्रों को इस व्यवस्था की पारदर्शिता और लचीलेपन का सम्मान करते हुए अपनी ज़िम्मेदार को समझना चाहिए । नहीं तो किसी भी व्यवस्था का नकारात्मक आशय निकल सकता है । मैं स्वतंत्रता में विश्वास रखता हूँ किन्तु उसके साथ ज़िम्मेदारी की भी अहम् भूमिका होती है ।

एच पी सी: आप कई अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में शरीक हुए हैं और आप कुलुल मेमोरिअल अवार्ड से भी सम्मानित हुए हैं । उनके विषय में आप क्या बताना चाहेंगे ?

प्रोफ. बाबू : हाँ मुझे कई बार अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रस्तुति देने का अवसर मिला और यह एक स्वर्णिम अवसर रहा है| मैंने मुख्यतया अपने अनुसन्धान और वैश्विक प्रयत्नों पर प्रस्तुति दी। इनमे इंडो फ्रेंच और इंडो यू एस वर्कशॉप प्रमुख थीं। इनके अतिरिक्त मैं NAAC (नेशनल अस्सेस्मेंट और accredition council) का एक्सपर्ट मेंबर भी हूँ। कुलुल मेमोरिअल अवार्ड मुझे सन 2001 में केमिकल इंजीनियरिंग में बेस्ट पेपर प्रेजेंटेशन के लिए मिला था ।

एच.पी.सी: एस डब्लूडी डीन की नयी भूमिका में आपकी क्या योजनायें हैं ?

प्रोफ. बाबू : मेरा मानना है कि कोई भी व्यवस्था तभी पूर्णतया सफल रहती है जब उससे प्रभावित होने वाले सभी लोग एकमत हों। इसके लिए मैं चाहता हूँ कि छात्रों से अधिक से अधिक मिल सकूँ और उनके विचारों से अवगत हो सकूँ। आजकी नयी पीढी के प्रगतिशील विचारों के माध्यम से हम अपनी प्रणाली और सुदृढ़ करना चाहते हैं। हमें मिलकर जटिल से जटिल समस्याओं के निदान करने है। मैं चाहता हूँ कोई भी व्यवस्था किसी व्यक्ति पर केन्द्रित न होकर व्यवस्था केन्द्रित हो और उसमे अधिक से अधिक पारदर्शिता हो। मैं इस तरह की योजनाओं से परिपूर्ण व्यवस्था कायम करने का प्रयत्न करूंगा।

एच पी सी: बिट्स के विद्यार्थियों के लिए लिए आपका सन्देश |

प्रोफ . बाबू: जीवन में हमेशा सच्चाई , इमानदारी और कठिन परिश्रम को मूलमंत्र मानते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए। इस विस्तृत पद्धति, इस ब्रम्हांड सभी के लिए कुछ न कुछ कार्य अवश्य है। देर है तो बस अपनी प्रतिभा को पहचानने की और सही दिशा में बढ़ने की। यहाँ बिताये जा रहे चार वर्षों में आप अधिक से अधिक अवसरों का उपयोग करें और एक सफल भविष्य निर्मित करें।

एच.पी.सी: एस डब्लूडी डीन की नयी भूमिका में आपकी क्या योजनायें हैं ?

प्रोफ. बाबू : मेरा मानना है कि कोई भी व्यवस्था तभी पूर्णतया सफल रहती है जब उससे प्रभावित होने वाले सभी लोग एकमत हों। इसके लिए मैं चाहता हूँ कि छात्रों से अधिक से अधिक मिल सकूँ और उनके विचारों से अवगत हो सकूँ। आजकी नयी पीढी के प्रगतिशील विचारों के माध्यम से हम अपनी प्रणाली और सुदृढ़ करना चाहते हैं। हमें मिलकर जटिल से जटिल समस्याओं के निदान करने है। मैं चाहता हूँ कोई भी व्यवस्था किसी व्यक्ति पर केन्द्रित न होकर व्यवस्था केन्द्रित हो और उसमे अधिक से अधिक पारदर्शिता हो। मैं इस तरह की योजनाओं से परिपूर्ण व्यवस्था कायम करने का प्रयत्न करूंगा।

एच पी सी: बिट्स के विद्यार्थियों के लिए लिए आपका सन्देश |

प्रोफ . बाबू: जीवन में हमेशा सच्चाई , इमानदारी और कठिन परिश्रम को मूलमंत्र मानते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होना चाहिए। इस विस्तृत पद्धति, इस ब्रम्हांड सभी के लिए कुछ न कुछ कार्य अवश्य है। देर है तो बस अपनी प्रतिभा को पहचानने की और सही दिशा में बढ़ने की। यहाँ बिताये जा रहे चार वर्षों में आप अधिक से अधिक अवसरों का उपयोग करें और एक सफल भविष्य निर्मित करें।

फोटोग्राफी क्लब द्वारा 7000 फोटोस को जोड़कर बनाया गया यह चित्र अपोजी 2010 में प्रदर्शित किया गया| यह अभूतपूर्व प्रयास अत्यंत सफल रहा

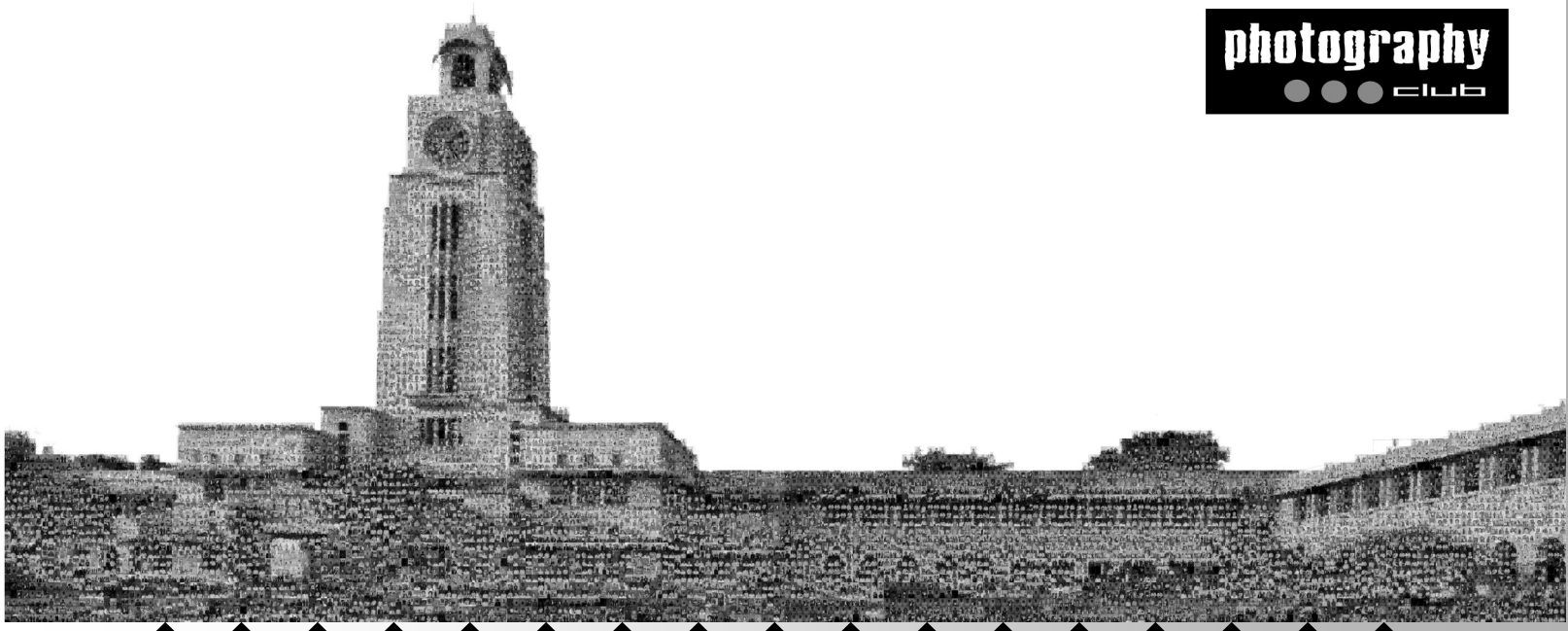

photography
club
BITS LIBRARY

photography
club

लव आज कल

लोकेश राज

आज इतने वर्षों बाद तुम्हें देखा | बारिश की बूंदों के बीच सतरंगी इन्द्रधनुष के समान तुमने अचानक से ही मेरे दिल के रंगहीन पटल पर कितने सारे रंग बिखेर दिए थे |पर न जाने क्यूँ ..ये रंग आज कुछ अलग से लग रहे थे | जैसे घाव से बहते हुए रक्त का रंग, जैसे घर को जलाने वाली अग्नि का रंग, जैसे किसी प्यासे के लिए समुद्री पानी का रंग .. जैसे तुम्हारे और मेरे बीच के इन फासलों का रंग | ये कैसा एहसास था ? वैसा तो निश्चित रूप से नहीं था , जैसा मैंने इन 5 सालों में हर पल तुम्हारे बारे में सोचते हुए महसूस किया था| आज जब तुम अनायास ही, बिना किसी पूर्वाभास के इस भीगी सुबह में मुझे दिखी, तो मेरी सारी कल्पनाएँ , इन 5 सालों में इस लम्हे के बनाये हुए सारे चित्र धुंधले होते हुए मालूम पड़े ..उनके सारे रंग झूठे जान पड़े..आखिर ऐसा क्यों हो रहा था ? तुम्हें देख कर मुझे यह कैसा एहसास हो रहा था ? यह प्यार तो नहीं था ...

सामने सागर की एक लहर तेज़ी से आगे आकर फिर पीछे की ओर जाने लगी| साथ ही मेरा मन भी पीछे की ओर उड़ने लगा| 5 साल पीछे | जब सब कुछ अलग था| सब कुछ शांत था| ठीक उसी शांत समुद्र की तरह, जिसके किनारे हम दोनों अकसर घंटों बैठे बातें किया करते थे| पर तब कहाँ पता था, की वह शान्ति तो तूफ़ान की पहले की शांति थी| तूफ़ान तो आया था, पर तब वह विध्वंसक नहीं था, वह तो जूनून था, प्यार का जूनून| मुझे आज भी वह दृश्य आईने में अपने साये के समान स्पष्ट है, जब मैंने तुम्हे पहली बार देखा था| तब भी तुम बारिश में भीग रही थी , ऑटो से बाहर निकलने के बाद अपने बालों से पानी निचोड़ रही थी| हालांकि उस वक्त तुम्हारे बाल अधिक भीगे नहीं थे , परन्तु तुम और तुम्हारी आदतें, इन्हीं पर तो मर मिटा था मैं|

मुझे नहीं पता था कि प्यार क्या होता है , हालाँकि फिल्मों में बहुत देखा था, किताबों में पढ़ा था , और तब तो आस पास भी सभी के लिए एक गर्लफ्रेंड होना फैशन सा बन गया था| पर मैं हमेशा यह सब देखकर संशय में पड़ जाता था| ऐसा नहीं था कि मेरा मन नहीं करता था इन सब का, परन्तु पुनः, मुझे नहीं पता था कि प्यार क्या होता है| क्या मात्र किसी का देखने में अच्छा लगना प्यार है ? क्या किसी से बातें करने में अच्छा लगना प्यार है ? और खुद ही आश्वस्त हुए बिना मैं किसी दूसरे को भला कैसे कुछ वादा कर सकता था| उसकी भी तो कुछ आशाएं , कुछ अपेक्षाएं होती होंगी| भला किसी को झूठी उम्मीदें दिलाना सही होगा क्या? बस यही सब सोच सोच कर मैं हमेशा रह जाता था| पर तुमसे मिलने के बाद तो ये सब बातें मन में कभी आई ही नहीं| अब सोचता हूँ तो अजीब लगता है, पर यह सच है ,ये सारे सवाल, सारी शंकाएं, उस वक्त, न जाने कहाँ गुम हो

गयीं थी| कुछ यदि रहता था तो बस तुम्हारा ख्याल, तुम्हारी बातें| तुम्हारे साथ एक एक पल बिताने के लिए मन कितना आतुर रहता था| तुम्हारी आवाज़ सुनने को हर वक्त कान तरसते थे| रास्ते में चलते हुए यूँ महसूस होता मानो तुम सामने से आ रही हो, पर अगले ही पल सच्चाई का एहसास होते ही मन बुझ सा जाता , और जब तक फिर तुम्हें देख न लेता वैसा ही रहता| और जब हम साथ होते, तो बातों में कैसे वक्त बीत जाता पता ही नहीं चलता| तुम्हारे हाथों को थामे हुए सागर किनारे चलना मानो दुनिया का सबसे खूबसूरत एहसास लगता था| जहाँ मैं पहले प्यार, रिश्ता इन सब शब्दों को सुन कर कुछ समझ नहीं पाता था, वही अब मन हर वक्त तुम्हारे साथ भविष्य के सुनहरे सपने सजाता रहता था| एक निश्चितता सी महसूस होती थी दिल को, जिसमें किसी चिंता या परेशानी की जगह ही नहीं बचती थी| उस दिन जब सागर की लहरों ने जब हम दोनों के बदनों को भिगो दिया था, और ठण्ड से ठिठुरते हुए हम दोनों बाँहों में बाहें डाले हुए वापस लौटे थे, तब मुझे तुम्हारी ओर से भी इस रिश्ते की सहमति सुनाई दी थी| बस फिर क्या था, जिंदगी तो जैसे एक खूबसूरत ख्वाब बन गयी | तुम्हारी बाँहों में तो हर एक पल जैसे जन्नत लगता था| एक सुन्दर भविष्य आगे साफ़ नज़र आ रहा था| घरवालों को भी कोई ऐतराज़ न होना था| होता भी क्यों? पिताजी के बड़े व्यापार का मैं एकलौता वारिस जो था| सो करीब 1 साल के इस सफर के बाद हमारे रिश्ते की परिणति शादी के रूप में तय हो गयी थी| और क्या चाहिए था हमें!

मैंने सुना था कि हर सच्ची प्रेम कहानी का दुखद अंत ही होता है| इससे कम से कम यह तो आश्वासन हुआ कि हमारा प्यार सच्चा था! शादी के एक महीने पूर्व ही हमारे कारोबार में बहुत बड़ा नुकसान हुआ, किसी ने धोखा किया, और एक झटके में ही हम अर्श से फर्श पर आ गए थे| हमारी आर्थिक स्थिति अत्यंत शोचनीय हो गयी थी| इस नयी मुसीबत का सामना करना सीखा नहीं था कि तभी एक दूसरा वज्रपात भी हो गया था| तुम्हारे माता पिता आये थे, और यह रिश्ता तोड़ दिया था| हालाँकि उन्हें हमसे सहानुभूति थी, पर उससे ज्यादा तुम्हारी फ़िक्र थी, और उन्हें मैं इसके लिए दोषी भी नहीं ठहरा सका था| तुमसे मिला था मैं, तुम परेशान थी| हालाँकि तुम्हारी आँखों में मैं अपने लिए प्यार साफ़ देख सकता था| पर तुममे अपने माता पिता का विरोध करने का साहस नहीं था| और सच बताऊँ तो मैं इतना स्वार्थी नहीं बनना चाहता था कि अपनी खुशी के लिए तुम्हे एक अनिश्चित भविष्य के लिए कहता| तुम जहाँ भी रहो खुश रहो, बस यही इच्छा थी मेरी|

सो यह सोचकर कि तुम सुख से रहोगी, और मैं मन ही मन तुम्हे सदा के लिए प्रेम करता रहूँगा, हम अलग हो गए थे|

पर आज 5 साल बाद तुम्हें जब वहीं सागर किनारे देखा, तुम अपनी आलीशान कार से निकल रही थी, अपने बालों से वैसे ही पानी निचोडते हुए, तुम्हारी खुशहाली तुम्हारी वेशभूषा से साफ़ नज़र आ रही थी| शादीशुदा होने के बावजूद तुममे बहुत ज्यादा अंतर नहीं आया था, पर फिर भी काफी अंतर था| तुम्हारे बड़े बड़े आभूषण, महंगे कपड़े,आलीशान गाड़ी, इन सब से अधिक मुखर थी तुम्हारी खुशी| तुम निश्चित रूप से जिंदगी से अत्यंत प्रसन्न थी| कोई गिला शिकवा नहीं था तुम्हें| एक खुशहाल जिंदगी की चमक तुम्हारे चेहरे पर साफ़ नज़र आ रही थी| पर यह सब देख कर मुझे क्यों बुरा लग रहा था? ऐसा क्यों महसूस हो रहा था कि मैं पिछले कितने वर्षों से एक छलावे में जी रहा था| जिस कल्पना में मैं जी रहा था, वो सब क्या एक भ्रम थी? जिस प्रकार मैं तुम्हे पल पल याद करता था, क्या मैं तुमसे भी वही उम्मीद करता था? यदि नहीं तो फिर आज इस क्रोध, इस द्वेष. इस मलिन भाव का क्या अर्थ था?आज कुछ टूटा हुआ सा महसूस हो रहा था मन में| क्या मेरा प्रेम सच्चा नहीं था ? क्यों तुम्हें खुश देखकर मैं खुश नहीं हुआ? आखिर ये क्या एहसास था? क्या मुझे तुम्हारी खुशहाल जिंदगी से ईर्ष्या हो रही थी? आखिर यह कैसा प्यार था? क्या यही अंतर होता है वास्तविक और काल्पनिक प्यार में? क्या तुम्हारे पास मेरे इन सवालों का कोई जवाब है ?

बिट्स पिलानी - पंचवर्षीय योजना - 2005-2010

टैग्स: ऍम. ऍम. एस., सिविल, ऍम. बी. ए., व्यास, गाँधी, आर. पी., अशोक

अगर याद न आया हो तो ये ***5 year plans*** है, भारत सरकार के शायद **दस** सम्पूर्ण हो गए हैं | हमारा तो **एक** ही है, पूरा होगा या नहीं, ये एक व्यक्ति विशेष के हाथों में है (हमारे thesis गाइड भई!) अच्छा ये बताइए नृत्य सिखा है कभी आपने ? हमने अपनी पंचवर्षीय योजना के अजेंडे में ये शामिल किया है हाल फ़िलहाल में (***डांस वर्कशॉप***) | तैराकी आती है आपको ? मुझे भी नहीं आती थी ! पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत हमने ये ठाना कि सीख कर रहेंगे, सो हमने पांच साल और 9 सेमेस्टर में कुल 15 बार स्विमिंग क्लब के दर्शन किये .... अब शायद थोड़ी सी आ गयी है :)

सच्चा अर्थशास्त्र तो न्याय बुद्धि पर आधारित अर्थशास्त्र है।

लग जाए | क्या नहीं मिला ? पंचवर्षीय योजना में हमें बस एक ***प्रेयसी*** नहीं मिली (**:O**) अजी छोरिए, कौन सी आपको मिली ... 90 ***"सुंदरियां"*** :P और 900 "***जिह्वालोलुपत्य नवयुवक***" भी भला कोई न्याय है !

ये तो था हमारी योजना का सारांश, जो कि जबतक आपके हाथो में वाणी का ये संस्करण होगा, अपने समाप्त पर होगी | कुछ देखा है इस जगह, उस पर दो तुक शब्द..... क्या अच्छा लगा ? छात्र! बिट्स पिलानी में किसी रिसर्वेशन का ना होना, और अन्य परीक्षाओं कि तुलना में bitsat का काफी पारदर्शी होना यहाँ अच्छे छात्र लाने में सफल है ! (**जय हो !**) ..... और कहें तो पिलानी में छात्रों को सभी प्रकार के हुनर प्रस्तुत करने के मंच मिलते हैं, मंच कौन सा चुनना है, ये आपके ऊपर निर्भर करता है :) | *आप जो करने आते हैं, वो शायद ना करें, और चाहें तो कुछ भी ना करें !*
हमारे 3 फेस्ट हैं (कृपया इन्हें प्राथमिकता के क्रम में पढ़ें) :- ओअसिस, अपोजी, बासम! .... ये क्रम इनकी लोकप्रियता का ही नहीं, बल्कि ये भी दर्शाता है कि पिलानी में पहले मौज मस्ती, फिर थोड़ी पढाई, और स्पोर्ट्स काफी हद तक, सिर्फ कुछ लोगो में सीमित होती हैं |

एक alum सुनीत रिखी एक बार मेरे रूम (जो कि 25 वर्षो पूर्व उनका था) आये थे | उनकी एक बात अबतक याद है :- रेगिस्तान में रहने वालो का जीवन अलग ही होता है, सच है वाकई ! हमारे अलुम्नी शायद इसी जीवन को याद कर, पिलानी से काफी जुड़े हुए हैं, एक काफी अच्छा पहलु है ये हमारे विश्वविधालय का (बिट्स को कॉलेज न बुलाएं, UGC हमें university का दर्जा देती है :), एक इंटरव्यू के दौरान पूर्व डीन नट्टू ने मुझे ये सीख दी थी) | ***हमारी पढाई*** ! - 4 सालो में दो डिग्री के विषयों को समाप्त कर देना, 2 वर्ष तक सामान्य course और 1 वर्ष में इंजिनियर :), थोड़ी बहुत भाषा-वादिता, थोड़ी बहुत अनुशाशन में लचरता (जो कि हम सभी को काफी रास आती है), ***पर सब कुछ, अन्य कितने ही गौरवशाली शिक्षण संस्थानों से कहीं बेहतर !***
कुछ दिनों पहले मुझे एक पूर्व ME छात्र का mail आया कि उन्होंने IISC बेंगलुरु में IEEE पेपर पब्लिश किया है जो शायद वो यहाँ नहीं कर पाते, और बिट्स के शिक्षक और छात्र सिर्फ अपने को बिट्स पिलानी का बुलाने में गौरवान्वित महसूस करते हैं | रिसर्च की इसी समस्या को अब काफी गहन तरीके से देखा जा रहा है, वर्त्तमान में हुए बदलाव इसके साक्षी हैं, ***और रिसर्च होती तो हैं ही, थोड़े और प्रयास की जरुरत***!

इस पंचवर्षीय योजना में विंग!, मौर्य विहार, हिंदी प्रेस, अपोजी 2007 , वाणी - 2008 , मैनेजमेंट assoc, H R क्लब, ऍम बी ए प्लेसमेंट, सभी का आनंद उठाया, योगदान करने की कोशिश की | क्या लेकर जा रहा हूँ ? दो - तीन crushes :P , कुछ सम्माननीय शिक्षक-गण, कुछ बहुमूल्य मित्र, काफी सारे प्यारे जुनिअर्स, और ..... ***अनगिनत अविस्मरनीय यादें !***

-निरुपम

पंचवर्षीय योजना संख्या 2005HS49488P

कहत कबीरा.....

सुनी थी बचपन से यह बात, जागते व सोये ;
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होए ../
सिर्फ मुए जो पढ़ि-पढ़ि पोथी,
पंडित बने न वो जग बिलोकी ||
सुनि कबीर की अमृतवाणी ,
मन भयो घोर विभोर
माना गुरु श्री आप को
बोलबचन सुनने की ठाणी ../
पोथी पढ़ कर क्या हासिल हैं ..
किया यदि नहिं प्रेम ..
ज्ञान विज्ञान हैं सब बेकल ..
साथ न हो गर कोई मेम..||
कंठस्थ किया यह गुरुमंत्र
किये दूर सब पोथी पत्र /
निकल पड़े हम तलाश में
यत्र तत्र सर्वत्र ||

सुना था हमनें दिल है बच्चा
जिसे भाये कोई एक हसीना /
पर न ये भोला न ही सच्चा
ये तो निकला कमबख्त कमीना ||

खोजा इतिहास हर कन्या का
निहारा भूगोल उस लावण्या का /,
प्रेम की भाषा सीखे खातिर
भूला गणित के भेद ये शातिर ||

प्रेम के सीखे आखर ढाई
बाप भाये न भाये है माई..
/
पोथी पढ़न को देवे जोर ..
पर ये क्या जानें ..ये दिल मांगे मोर..||

कन्या हेतु इक किये जतन
चिली पनीर व आलू दम ,
कार्ड से ले ली फ्राइड मैगी
रूपया तो फिर देंगे डैडी/
गुज़रे हफ्ते चार या तीन
अफसाना अब था संगीन
कहे प्रेम के ढाई आखर
जान पड़ा लांघा हो सागर||
कन्या पर फिर ना मुस्काई
न ही बोले वो अक्षर ढाई
नहीं हो तुम मेरे हरजाई
'इस तरह से तो मैं सोच न पाई "||
हाय!!
विद्या रही न रही थी माया
ज्ञान मिला न प्रेम का साया
बने न पंडित बने फकीर
क्या खूब कहिन संत कबीर ||

– लोकेश राज

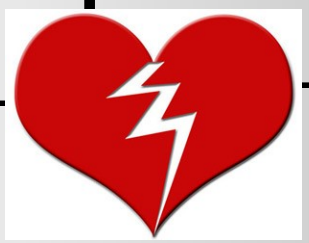

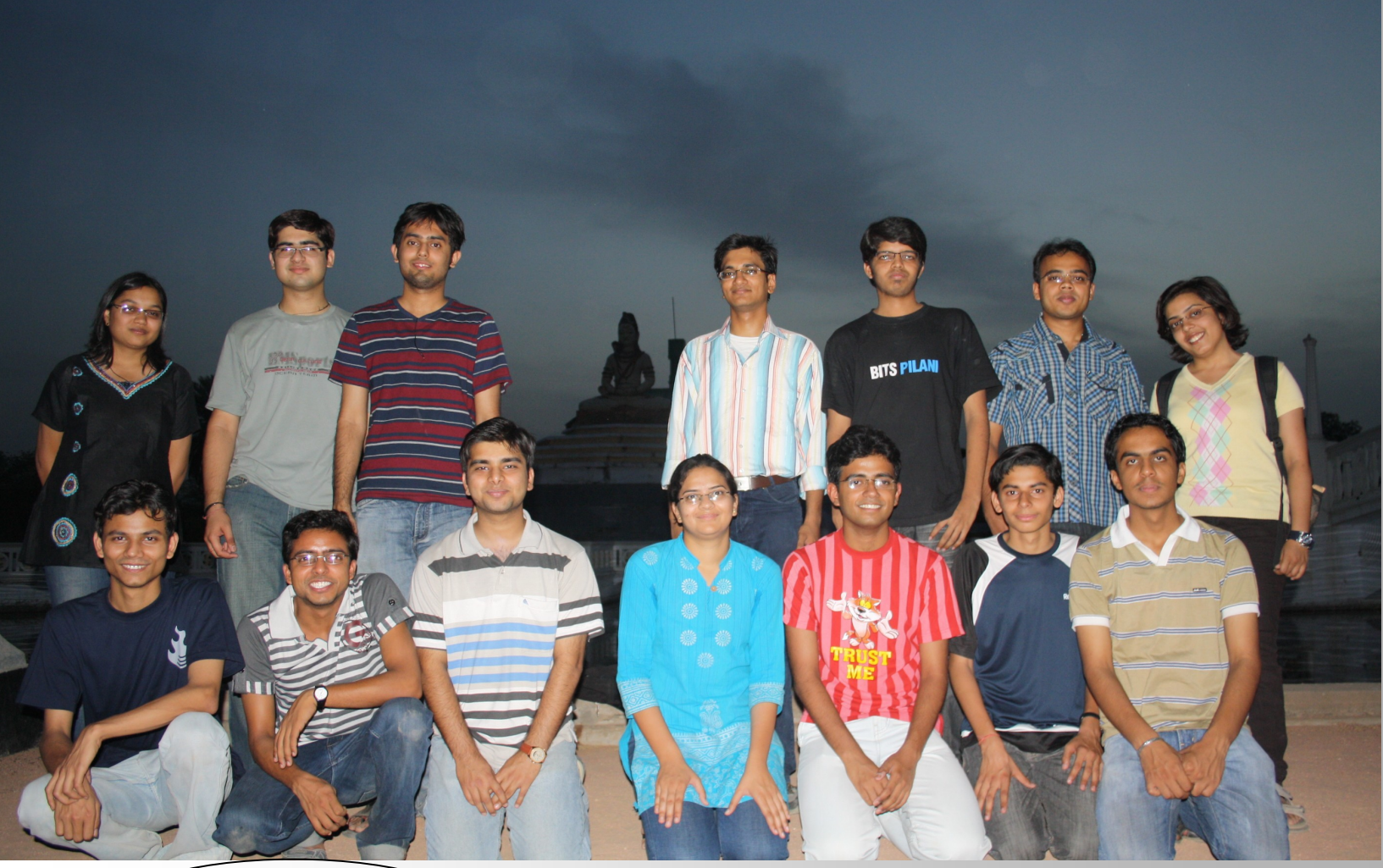

वाणी टीम 2010

अनुजा, रोहित , रोहन,नितीश ,ऋत्विक, प्रेम, अर्पिता ,
निमिष, किशन, नितीश पाठक, हिना जैन, लोकेश राज, निशांक, सुमित

आभार ::निरुपम आनंद, राजशेखर, सुरभि ,शैलेश झा. प्रतीक माहेश्वरी,. नित्य कुमार शर्मा.. पुष्प सौरव, ऋतु कांडपाल. सुमन तिवारी

विशेष आभार :

प्रो॰ लक्ष्मीकांत माहेश्वरी, प्रो॰जी रघुरामा,प्रो॰ **बी वी बाबू** , श्री एन वी मुरलीधर रॉव, श्री संजय कुमार वर्मा, श्री राजीव गुप्ता, श्री आर.के.मित्तल़ डॉ॰ संगीता शर्मा. डॉ॰ **पुष्प लता, श्रीमती देविका सांगवान,श्री गौतम सिंघवी**

उदघोषणा :

ाणी एक परिसर पत्रिका है, जो केवल विद्यार्थियों के लिए प्रकाशित की जाती है। इसका किसी भी प्रकार से क्रय विक्रय पूर्णतया अवैध है। दोषी पाये जाने पर उचित कार्यवाही की जायेगी।

हिन्दी प्रेस क्लब दशको से *बिट्स पिलानी* के अद्वितीय विद्यार्थी जीवन का अभिन्न हिस्सा है। समय बदला, लोग बदले, प्राथमिकताएं बदली, पर हमने हमेशा से ही इस परिसर में अलग पहचान को कायम रखा है। निष्पक्ष पत्रकारिता एवं इस बदलते समय में हिंदी को जीवित रखना, यही हमारा उद्देश्य है। वाणी उसी आकांक्षा की सिद्धि हेतु एक प्रयास है, जोकि स्वयं भी एक परंपरा बन चुकी है।

www.hpc-bits.blogspot.com